सितम्बर-2013 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 4 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

सितम्बर-२०१३

जल में थल में और गगन में
फैल रहा है ज्ञान प्रकाश
ऋषिवर तेरी अमर साधना
सुरभित हो रही है आज

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २१

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
भाद्रपद शुक्ल द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९

September - 2013

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २१

हलचल २२

०४ वेद सुधा
०८ भारतीय अभारतीय विभाजन ही उचित
१० डिप-डिप
१४ Cremation
१५ मुर्दापरस्ती की दुनिया
१६ सँभल- आगे खाई है
१८ न्यायालय की भाषा?
२३ ज्योतिष्शास्त्र का मूल वेद
२५ पाठ्य सामग्री की परीक्षा
२८ विज्ञानवेत्ता दार्शनिक महर्षि कणाद
२६ जनेऊ प्राकृतिक चिकित्सक है।

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - २

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२९७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

यं कुमार नवं रथचक्रं मनसाकृणोः। एकेषं विश्वतः प्रांचमपश्यन्नधि तिष्ठसि।।
यं कुमार प्रावर्यतो रथं विप्रेभ्यस्परि। तं समानु प्रावर्तत समितो नाव्याहितम्।। ऋग्.१०/१३५/३-४

अर्थात्- कुत्सितता को मार देने वाले हे कुमार! इन्द्रिय रूपी नौ द्वारों वाले स्तुत्य व गतिशील शरीर रूप रथ को, जिसमें ऊपर से दिखाई देने वाले चक्र नहीं लगे हैं (फिर भी वह अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या है)। सब ओर आगे बढ़ने वाले इस रथ पर तू इधर उधर न देखता हुआ-लोभ-सौन्दर्य-आकर्षण में न उलझता हुआ आरुढ़ होता है। ध्यान भटकने से रथ का दुर्घटना ग्रस्त होना आशंकित है। यह शरीर रथ तो हमें सुलक्ष्य पर तभी पहुँचायेगा, जब हम विषयाकृष्ट न होते हुए एकाग्रवृत्ति से इसका संचालन करेंगे। इस शरीर रथ के संचालन की शिक्षा,माता-पिता व आचार्य ये प्राप्त होती है। संसार सागर से पार होने के लिए तथा जीवनयान को शांति से प्रचालन हेतु वासना की नहीं प्रभु उपासना की आवश्यकता प्रतीत होती है। वेदानुयायी शासक का यही कर्तव्य होता है कि वह राष्ट्र में ऐसी शिक्षा व्यवस्था करे जिससे माता-पिता एवं आचार्यगण बालकों के चरित्र निर्माण के प्रति सजग सतर्क रहें। यदि चरित्र होगा तो स्वास्थ्य होगा। स्वस्थ्य शरीर होगा तो पुरुषार्थ के द्वारा धन-वैभव एवं यश भी भरपूर युवाओं को मिलेगा, और राष्ट्र भी विश्व का शिरमौर बनेगा।

एक शासनतंत्र के अन्तर्गत सीमाओं से घिरा भूभाग देश प्रत्यक्ष दिखाई देता है, जबकि उसकी भाषा, संस्कृति एवं इतिहास से परिलक्षित होती है उसकी आत्मा, जिसको हम 'राष्ट्र' नाम से संबोधित करते हैं। बिना भेदभाव के प्रत्येक परिवार उसकी इकाई है। बाल-गोपाल इसकी धरती के खिलते खेलते और खिलखिलाते हुए फूल हैं। बलवान प्रौढ़ इसके स्तम्भ हैं तो वयस्वी-वयधनी वृद्ध इसकी अनुभूतियों के मस्तक हैं। इस संपूर्ण ढांचे को जीवन्त बनाते हैं इसके युवा। 'युवा'शब्द कितना ही उलट पलट जाये-सदा जीवन्त बना रहता है। 'युवा'शब्द उलट कर वायु बन जाता है। जैसे वायु प्रवाहित होकर शरीर का आधारभूत प्राण बनती है, वैसे ही युवा 'राष्ट्र' के गतिशील प्राणाधार होते हैं। एक स्थल पर पड़ी गन्दगी से उठती दुर्गन्ध केवल उसी स्थल तक सीमित नहीं रहती, वह वायु के साथ बहकर सर्वत्र फैल जाती है। इसी प्रकार उद्यान के खिले फूलों की सुगन्ध वायु से मिलकर दूर-दूर तक वातावरण को सुरभित कर देती है और सर्वत्र प्राणियों को जीवनानन्द प्रदान करती है। ठीक इसी प्रकार युवजन राष्ट्र के मरुत अवतार मूलाधार होते हैं।

सशक्त युवाओं के निर्माण की वैदिक ऋषियों की योजना का गुणगान तो हमारे आधुनिक ऋषि डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम भी करते हैं। माता-पिता-आचार्य यदि सर्वत्र सच्चरित्र हों तो राष्ट्र उत्तम बालकों के निर्माण में अवश्य सफल होता है। माता-पिता तो अपने बालकों को तन-मन-मेधा से सबल बनाना ही चाहते हैं। किन्तु वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा के आचार्यों को भी तदनुकूल प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे वे माता-पिता-गुरु तीनों के दायित्व का निर्वहन करें। आज शिक्षण काल में ब्रह्मचर्य व्रत या संयम पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है, प्रत्युत इसके विपरीत असंयम व ब्रह्मचर्य के स्खलन का वातावरण दूरदर्शन के दृश्यों, चलचित्रों, कथाओं एवं सचलभाषा वार्ताओं के द्वारा फैलाया जाता है। न्यूनतम पच्चीस वर्ष तक इन्द्रिय संयम पर ध्यान दिए बिना चरित्र का निर्माण नहीं हो सकता। वर्तमान में ब्रह्मचर्य शब्द उपहास एवं उपालम्भ का पर्याय बन गया है। महर्षि दयानन्द ने बालकों को सचेत करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में बताया है- 'जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण, वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा।'

प्रोफेसर श्री हम्बीर सिंह मुझे प्रायः मिलते रहते हैं और अपने विदेश प्रवास के अनुभव बताते रहते हैं। उन्हें युगाण्डा में समृद्ध पद पर नियुक्ति मिली। आलीशान बंगला, नौकर-चाकर, वायुयान से भ्रमण सर्वसम्मान होते हुए भी वे अपने परिवार को उस समय सुरक्षित भारत वापस ले आये, जब उनके बच्चों ने पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी क्योंकि इसके बाद सभी बच्चों को छात्रावास में रहकर पढ़ना पड़ता है, और आत्म संयम की बात तो दूर वे सभी प्रकार के भोग संभोग के लिए स्वतंत्र होते हैं

और उनके शिक्षक-शिक्षिकाएँ भी इसमें सहभागी बनते हैं। प्रोफेसर हम्बीर सिंह जैसे कितने संस्कारनिष्ठ लोग हैं,जो सुविधाओं को लात मारकर अपने खेतों-खलिहानों में वापस आकर सन्तति के माध्यम से संस्कृति की रक्षा करते हैं। इसके विपरीत पद-प्रतिष्ठा एवं समृद्धि के लिए लोग अपसंस्कृति में डूब जाने को अपना गौरव समझते हैं, और सामान्य विपन्न लोग उन्हीं को आदर्श मानकर अनुकरण करते हैं और शील के स्थान पर अश्लीलता का राज्य बढ़ता चला जाता है। इसीलिए तो महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में सहशिक्षा का निषेध किया है।

अमरीकी ब्यॉय स्काउट्स ने अपने प्रवेश नियमों में कुक्रान्तिक बदलाव करते हुए समलैंगिक युवाओं के प्रवेश की आज्ञा दे दी है। हालाँकि यह बदलाव केवल निचले स्तर पर लागू होगा। स्काउट लीडरों की भर्ती में समलैंगिकों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध जारी रहेगा (हिन्दुस्तान २५.५.१३)। बाल समाजसेवी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित संगठन का जब यह अधःपतन होगा, तब वासना के बवण्डर से बालकों को कैसे बचाया जा सकता है? तोशा ठक्कर २४ वर्षीय छात्रा की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दिए जाने पर आस्ट्रेलियाई नागरिक को ४५ साल की सजा सुनाई गई। ब्रिटेन में एक भारतीय महिला से दुष्कर्म के अरोपी को ११ साल की जेल की सजा सुनाई गई।

पश्चिम की चली हवा ऐसी, पूरब का सूरज भूल गये,
अपना गौरव भूल गए दुष्कर्मों के फन्दे पर झूल गये।

जिस भारत में वेश्यावृत्ति के प्रति घृणा होती थी उसके पुनर्वास के प्रयत्न होते थे, वहाँ खुले आम युवतियों से बलात्कार होने लगे। दुष्कर्म की होड़ इतनी भयंकर मोड़ ले गई कि अबोध कन्यायें भी युवकों की हवस की शिकार बनने लगीं। खाकी वर्दी वाले थाने के निकट कूड़ाबीनती निर्धन बालिका को खींच लाते हैं। और उसी जनरक्षास्थल पर सरेआम अपना मुँह काला करने लगते हैं। मदिरा में मदहोश होकर सगे सम्बन्धी भी इस होड़ के कोढ़ का रूप देखे जाते हैं। वे चाहे उच्च पदस्थ राजनेता हों या राजपत्रित अधिकारी- अन्ध भोग लिप्सा में अपनी प्रतिष्ठा को चकनाचूर करने में हिचक नहीं करते। कुछ माह पूर्व दिल्ली में निर्भया के साथ हुई पैशाचिकी के अपराधी जब कारागार ले जाये गये तो उनमें से एक को कारागार के कैदियों तक ने ही मौत के घाट उतार दिया। इन अवांछनीय घटनाओं के लम्बे चिट्ठे रोज अखबार आपके सामने लाते हैं। एक ऐसी दुष्कर्म पीड़िता ने जो आदर्श साहसिक समुद्धार का कार्य किया है उसकी सराहना की जानी चाहिए। आइये! मिलिए वीरांगना सुनीता कृष्णन से और सुनिये मैसूर में दिए उनके भाषण के कुछ अंश- 'मैं यौन हिंसा के खिलाफ काम कर रही हूँ। दरअसल मैं खुद बचपन में दर्दनाक यौन हिंसा का शिकार हुई थी। मैं मात्र १५ साल की थी, जब आठ दरिन्दों ने मेरे साथ बलात्कार किया। उस घटना ने मेरे अन्दर गुस्सा पैदा किया, ऐसा गुस्सा जिसने मुझे यौन हिंसा के खिलाफ लड़ने की हिम्मत दी। हादसे के बाद दो साल तक मेरा बहिष्कार किया गया मुझे सबसे अलग रखा गया, मुझे कलंकित बना दिया गया। यह हमारे समाज की विडम्बना है। हमें पीड़ित को और प्रताड़ित करने में महारथ हासिल है। यौन उत्पीड़न की समस्या निम्न वर्ग से उच्च वर्ग तक फैली हैं। मैं एक आई.ए.एस. अफसर की १४ साल की बेटी को जानती हूँ जो हीरोइन बनने के लिए घर से भागी और बलात्कार की शिकार हुई। अब तक मैंने तीन हजार दो सौ लड़कियों को बचाया है। यौन हिंसा की शिकार इन बच्चियों की कहानियाँ दिल दहलाने वाली हैं। उनका न केवल शारीरिक शोषण किया गया बल्कि दरिंदगी भी की गई। जुल्म करने वाले पुरुष किसी के भाई किसी के पिता तो किसी के पति थे। यौन उत्पीड़न के बाद लड़कियों को जबरन सैक्स बिजनेस में धकेला जाता है। कुछ को विरोध की वजह से जान गँवानी पड़ती है। (दैनिक हिन्दुस्तान दिनांक २५ मई २०१३)

सुनीता कृष्णन की संस्था 'प्रज्जवला' महिला सैक्स वर्करों के करीब पाँच हजार बच्चों की पढ़ाई का दायित्व सँभाल रही है। शासन अपने राजस्व एवं विदेशी मुद्रा के प्रलोभनवश मांस-मदिरा के व्यवसाय को बढ़ावा देता है और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अनाचार कदाचार के भड़काऊ दृश्यों को घर-घर पहुँचाता है। इसीलिए समाज में चरित्र का विनाश होता जा रहा है। युवा राष्ट्र के प्राण हैं और चरित्र युवाओं का प्राण है। यदि चरित्र का ह्रास होता है तो राष्ट्र को निष्प्राण होने से बचाया जाना असंभव है। क्या राष्ट्रनायक किंचित विचार करेंगे?

देवनारायण भारद्वाज - अलीगढ़

आत्म निवेदन

बहुत कठिन है डगर कर्त्तव्यनिष्ठा की

सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने आदर्श राष्ट्र का स्वरूप प्रस्तुत किया है जो लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर आधारित है परन्तु यह लोकतन्त्र योग्यता व उच्चतम नैतिक मूल्यों आधारित है। राजा (शासक), राजपुरुष, मन्त्रिमण्डल के सदस्य, सेनापति, न्यायाधीश सभी न केवल अपने-अपने कार्य में दक्ष हों वरन् उच्चतम मानवीय मूल्य भी उनमें कूट-कूट कर भरे हों। यहाँ तक कि न्यायालय में गवाही देने वाले भी आप्त हों,यहाँ तक ऋषि की सोच थी। इसके संदर्भ में जब आज अपने परिवेश को देखते हैं तो सर्वथा विपरीत वातावरण दिखायी देता है। कार्यक्षेत्र में दक्षता तो फिर भी दृष्टिगोचर होती है पर नैतिकता की कसौटी पर आज के शासक, राजपुरुष (अफसर व कर्मचारी वर्ग), न्यायाधीश, संक्षेप में कहें तो विधायिका, कार्यकारी तथा न्यायिक सभी क्षेत्रों में पतन की पराकाष्ठा दिखायी देती है। और तो और भ्रष्टाचार का यह विषधर सेना को भी डस चुका है। राष्ट्र की सुरक्षा ही दॉव पर लग गयी है। अभी इटली निर्मित अगस्ता वैस्टलैण्ड हैलीकाप्टर की खरीद में ३६०० करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार संसद के पटल पर है। कोलगेट, २ जी, कामनवैल्थ खेल, रेल मंत्रालय के महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति में हुये बड़े-बड़े भ्रष्टकाण्ड चर्चा में हैं।

ठीक ही कहा गया है 'यथा राजा तथा प्रजा'। आज भ्रष्टाचार सर्वोच्च स्तर पर व्याप्त है। इसमें दल विशेष की बात नहीं है कोई पीछे दिखायी नही देता। जब बात शीर्ष स्तर के नेताओं को बचाने की आती है तो पूरा तंत्र बचाव में खड़ा हो जाता है। अभी हाल में एक बिल पास करने की तैयारी की जा रही है, जिसमें 'सूचना का अधिकार अधिनियम' से राजनीतिक दलों को मुक्त रखा जाय, यह प्रबन्ध किया जा रहा है। क्यों?ताकि यह पता न चले कि राजनीतिक दलों को चन्दा किस-किस से मिल रहा है। यह सब घोटाला बन्द कमरे में रहे इसलिये उपरोक्त व्यवस्था की जा रही है। भ्रष्टाचार की नदी के उद्गम स्थल को गुप्त रखने में सब सहमत प्रतीत होते हैं।

आज का चुनावी समर धनबल, बाहुबल व जातिबल पर आधारित है, सभी जानते हैं। आधे से अधिक नेताओं, यहाँ तक कि मंत्रिमण्डल के सदस्यों पर भी आपराधिक मुकदमे चल रहे हैं फिर भी वे पदासीन हैं।

ऐसे वातावरण में माननीय उच्चतम न्यायालय के दो निर्णयों ने राजनेताओं की साँसे अव्यवस्थित कर दी हैं। पहला जिन व्यक्तियों को निचली अदालत ने अपराधी मान सजा दे दी है अथवा जो न्यायिक हिरासत/जेल में बन्द हैं वे चुनाव नहीं लड़ सकते और अगर वे पहले से ही सांसद/विधायक हैं तो रह नहीं सकते। दूसरे राजनीतिक दल जाति पर आधारित रैलियाँ नहीं कर सकते। न्यायालय की चोट मर्मान्तक है। राजनेता छटपटा रहे हैं। अब इस फैसले को निरस्त करने हेतु संविधान संशोधन लाया जा रहा है।

गरज यह कि राजनेताओं के शुद्धिकरण हेतु जो भी व्यवस्था निर्मित की जावेगी उसे येनकेन प्रकारेण निरस्त कर दिया जावेगा। यह स्थिति तो तब है जब न्यायालय तक मामला पहुँचेगा। उससे पूर्व तो किसी न किसी जाँच एजेन्सी को मुकदमा बनाना पड़ेगा। आरोप सिद्ध होने लायक सबूत जुटाने होंगे। निष्पक्ष, स्वतंत्र, निर्भीक जाँच एजेन्सी ही ऐसा कर सकती है। पहले ही जो देश की उच्चतम जाँच इकाई है उसकी स्वायत्तता की कलई खुल चुकी है। उच्चतम न्यायालय उसे 'तोता' की संज्ञा दे चुका है।

इस सबको देख घोर निराशा होती है। राजनेताओं से नीचे उतर ब्यूरोक्रेसी तथा पुलिस फोर्स की बात करते हैं तो सर्वत्र असंवेदनशीलता तथा भ्रष्टाचार का साम्राज्य दिखाई देता है। पर इस सब के बीच में ऐसे दृढ़प्रतिज्ञ, कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी दिखाई दे जाते हैं जो किसी भी कीमत पर अपने कर्तव्य से च्युत् नही होते। मैं इन्ही को रेयरेस्ट ब्रीड कहता हूँ। यही राष्ट्र की आशा हैं।

आज स्थिति यह है कि स्थानीय पुलिस ऑफिसर स्थानीय टटपूँजिए नेताओं के समक्ष ही हाथ बाँधे खड़े रहते हैं। ऐसे में 'दामाद जी' को आरोपित करने हेतु तो गज भर का कलेजा चाहिए था, जो आई.ए.एस. अधिकारी अशोक खेमका में है।

सीनियर आई.ए.एस. आफिसर अशोक खेमका ने जिस समय सोनिया गांधी के दामाद वाड्रा की लैण्ड डील अस्वीकृत की थी वे इसका परिणाम भली भाँति जानते थे। परन्तु बीस साल के कार्यकाल में ४४ से ज्यादा स्थानान्तरण भुगत चुके खेमका ने इसकी परवाह नहीं की। नतीजा एक और स्थानान्तरण। परन्तु समस्त जाँच के उपरान्त खेमका का स्पष्ट कथन है कि यह कोई व्यापार या डील नहीं यह सिर्फ और सिर्फ दलाली है।

अभी सबसे ताजातरीन उदाहरण उत्तर प्रदेश के जिला गौतमबुद्ध नगर में कार्यरत् एस.डी.एम दुर्गाशक्ति नागपाल का है। यथानाम तथा गुण के अनुसार दुर्गा ने खनन माफिया पर नकेल कस दी। अतः एक मामले में उन्हें फँसाया गया। कहा गया कि नोएडा के कदालपुर गाँव में एक बन रही मस्जिद की दीवार ढहाने पर दुर्गा ने अपने कर्त्तव्य की अनदेखी की। उ.प्र. सरकार ने दुर्गा को

निलम्बित कर दिया। इस मामले में सोनिया गाँधी ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है। पर समुदाय विशेष के वोटों के लालच में उ.प्र. सरकार ने इस मामले में कड़ा रुख अख्त्यार कर लिया है। यहाँ तक भी कह दिया गया है कि भले ही केन्द्र सरकार सारे आई.ए.एस. अफसरों को वापस बुला ले राज्य सरकार उसके अफसरों से काम चला लेगी। यहाँ एक आश्चर्य यह भी है कि वक्फ बोर्ड दुर्गा को क्लीनचिट दे चुका है फिर भी उ.प्र. सरकार अड़ी हुयी है। यह भी ध्यातव्य है कि मस्जिद अगर बनायी भी जा रही थी तो भी माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार ऐसे निर्माणों के प्रतिबंधित होने से एस.डी.एम.न्यायालय के आदेश की अनुपालना कर रही थीं। परन्तु बात यह नहीं है। कुछ ही दिनों में दुर्गा ने शक्तिस्वरूपा बन 'खनन माफिया' पर काल के समान जो वज्राघात किया था यह उसका राज्य की ओर से इनाम है। राज्य के एक मन्त्री द्वारा यह दावा करने से कि 'इस एस. डी. एम. को ४१ मिनट में हटवा दिया', आशंका की पुष्टि होती है। क्या ऐसे राष्ट्र में मूल्यों की रक्षा होगी?

दुर्गा शक्ति की गलती यह थी कि नोएडा के खनन माफिया के विरुद्ध सख्त कदम उठाते हुए फरवरी से जुलाई के मध्य ६६ एफ.आई. आर. दर्ज करायीं, १०४ लोगों को गिरफ्तार किया और अवैध खनन में लगे ८१ वाहनों जब्त किया। गत छः माह में उन्हें अनेक धमकियाँ भी मिलीं।

अभी राजस्थान में एक आई.पी.एस. आफीसर पंकज चौधरी ने एक विधायक के पिता गाजी फकीर की संदिग्ध गतिविधियों के चलते उसकी हिस्ट्रीशीट दोबारा खोल दी तो उसका स्थानान्तरण कर दिया गया।

इस प्रकार हम देखते है कि मुट्ठीभर ही सही कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी अपना कार्य करना चाहते हैं पर राजनेता उन्हें ऐसा नहीं करने देना चाहते। पर रास्ता इन्हीं कर्मयोद्धाओं के बीच में से निकलेगा, नरेन्द्र कुमार, I.P.S.(मुरेना), जियाउल हक I.P.S.(प्रतापगढ़), कान्स्टेबल महावीर सिंह (फरीदाबाद), ए.एस.आई. धर्मपाल (हरयाणा), पोलोज थामस (राष्ट्रीय राजमार्ग अधिकरण), यशवन्त सोनवाने (ए.डी.एम. मनमााड), मंजुनाथ शंभुघम (लखीमपुर), सत्येन्द्र दुबे (परियोजना निदेशक, राष्ट्रीय राजमार्ग अधिकरण,गया) की शहादत कर्त्तव्य निष्ठों के लिए आदर्श प्रेरणा का स्रोत्र रहेगी। के.जी. अल्फास (दिल्ली), ए.एस. सरमा (आन्ध्र), अरुण भाटिया (महाराष्ट्र), उमाशंकर (तमिलनाडु), पूनम मलकण्डिया (आ.प्र.), जी.आर. खेरनार, (महा.), मनोज नाथ (बिहार) आज भी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि यद्यपि कर्त्तव्यनिष्ठा आज के भारत में सुविधा तथा पुरस्कार नहीं दुविधा तथा संकट लेकर आती हैं पर फिर भी कर्त्तव्यच्युत् होने से बचा जा सकता है।

महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने ६७ वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर अपने उद्‌बोधन में भ्रष्टाचार का बोलबाला स्वीकार किया है पर इस भ्रष्टाचार को समूल नष्ट तभी किया जा सकता है जब राज्य अधिकारियों को ईमानदारी से कार्य करने की सजा मिलने की प्रथा को कुचल दिया जाय। क्या कारण है कि आम चुनावों से पूर्व थोक के भाव अधिकारियों के स्थानान्तरण होते हैं? क्या राजनेताओं के हाथ से स्थानान्तरण का अधिकार वापस लिया जावेगा? ईमानदारों की उपेक्षा तथा चाटुकारों को सम्मानित करने की प्रथा बन्द होगी?

ऋषि दयानन्द ने ठीक लिखा है- 'सब राज और प्रजापुरुषों के सब दोष और गुण गुप्तरीति से जाना करे जिनका अपराध हो, उनको दण्ड और जिनका गुण हो, उनकी प्रतिष्ठा सदा किया करे।' निराशा की स्थिति में हताश होने की आवश्यकता नहीं है। समय बहता झरना है। सदैव एकसा नहीं रहता। इतिहास की उलट पुलट गवाह है। अतः भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण की आवश्यकता है। एक बात और हम दूसरे से ईमानदारी की अपेक्षा करें और स्वयं भ्रष्टाचार की गंगा में गोते लगाते रहें, यह नहीं चल सकता। हम जैसा परिवेश चाहते हैं तदनुकूल स्वयं भी अपने को ढालें।

PUNISHED FOR PROBITY?

October 8, 2012 | Haryana's inspector general of registration Ashok Khemka orders inquiry into sale of 3.5 acres in Shikohpur village, Gurgaon, by Robert Vadra's Sky Light Hospitality to DLF for ₹58 crore

October 11 | Haryana government issues transfer orders to Khemka. Moves him to state seed development corporation

October 12 | Khemka asks deputy commissioners of Gurgaon, Faridabad, Palwal and Mewat to probe land deals of Vadra from 2005

October 15 | On last day in office, Khemka cancels Gurgaon land deal

"I initiated an inquiry on my own on October 8... I am not aware what instigated my transfer. If I have misrepresented facts, I may be prosecuted
Ashok Khemka

"If assertions made by the IAS officer prove someone guilty in the inquiry, action will be taken against the defaulter. And if Khemka has misquoted facts, action will be taken against him
B S Hooda | CM HARYANA

अन्तिम बात। लोकतन्त्र में चुनाव का समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। यही बदलाव का निर्णायक अवसर है। आगे एक वर्ष में चुनावों का दौर हमारे समक्ष होगा। भ्रष्ट और दागी प्रत्याशियों को पूर्णतः नकारें, श्रेष्ठों को मत अवश्य दें। मतदान न करने को पाप समान समझें। धनबल, जातिबल, बाहुबल को अतीत का अंग बना दें। अपना मत गोपनीय है, डर किस बात का है? जिन्होंने स्वयं को साबित किया है, जो ईमानदार, राष्ट्रभक्त हैं उन्हें शासन सौंपने की तैयारी करें। सपनों का भारत निर्मित तो होना ही है क्या पता उसके प्रारम्भ का यही समय हो!

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

❑❑❑

दृष्टिकोण

भारतीय अभारतीय विभाजन ही उचित

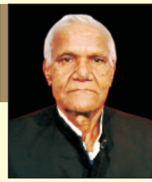

खुशहाल चन्द आर्य

विभाजन की प्रक्रिया मानव मात्र की उत्पत्ति से चलती आ रही है। ईश्वर ने जब जीव के लिए प्रकृति द्वारा यह सृष्टि रची,तभी से इस सृष्टि में दो किस्म के लोग होते आये हैं। जो अच्छे विचारों के,परोपकारी व जनहित का अच्छा काम करने वाले अहिंसक व्यक्ति थे, उनको आर्य कहा जाता था और उनके विपरीत जो दूसरों को दुःखी करने वाले दुष्ट व हिंसक व्यक्ति थे उनको अनार्य कहा जाता रहा। जैसाकि वेदों में भी वर्णित है। यह सतयुग का जमाना था। हालाँकि उस युग में अच्छे लोग (आर्य) अधिक थे और बुरे लोग (अनार्य) कम थे पर दोंनों ही किस्मों के लोग रहते थे। तब भी लड़ाई झगड़े होते थे पर कम होते थे। इसके बाद त्रेतायुग आया उस समय भी दो विभाजन थे। अच्छे आदमियों को 'सुर' यानि देव और बुरे आदमियों को असुर यानि राक्षस कहा जाता था। यह रामायण का समय था। देवता पक्ष में बलशाली व्यक्ति श्री राम थे और असुरों में बलशाली व्यक्ति रावण था। इन दोनों में श्री राम की धर्मपत्नी सीता के रावण द्वारा अपहरण होने पर भीषण युद्ध हुआ पर अन्त में देवताओं यानि सत्य की विजय हुई और राक्षसों यानि असत्य की पराजय हुई। फिर द्वापर युग आया। इसमें पाप और धर्म का युद्ध कौरव और पाण्डव के नाम से हुआ। कौरवों का राजा दुर्योधन था जो अपने ही भाई पाण्डवों को एक इंच भूमि भी नहीं देना चाहता था। उसके पक्ष में दादा भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य तथा कर्ण जैसे महाबली योद्धा थे परन्तु वे अधर्म का साथ दे रहे थे। उधर पाण्डवों का राजा सत्यवादी युधिष्ठिर था और उसके पक्ष में भीम जैसा बलशाली, अर्जुन जैसा धनुर्धर और श्रीकृष्ण जैसे बलशाली व राजनीतिज्ञ थे जो धर्म का पक्ष ले रहे थे। यह धर्म और अधर्म का युद्ध था। सारा विश्व इन्हीं दोनों भागों में बँटा हुआ था। जो पाण्डवों की तरफ थे, वे धर्म के पक्ष में कहलाते थे और जो कौरवों की तरफ थे, वे अधर्म के पक्ष में कहलाते थे। उस समय धर्म और अधर्म यही विभाजन था। सदा की भाँति धर्म की विजय और अधर्म की पराजय हुई।

इसके बाद कलियुग में भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ और हिन्दुओं की फूट के कारण भारत पर सात सौ वर्षों तक मुसलमानों का राज्य रहा। तब दो पक्ष थे। एक हिन्दू दूसरा मुसलमान। इन दोनों का परस्पर का विरोध सत्य और असत्य पर नहीं था बल्कि अपने-अपने स्वार्थ और अपने-अपने धर्म पर आधारित था इसलिए बिना निर्णय निकले ही परस्पर युद्ध चलते रहे। तब भारत का विभाजन हिन्दू और मुसलमान के नाम से जाना

जाता रहा। सात सौ वर्षों तक यही स्थिति रही फिर अंग्रेज भारत में आये तब हिन्दू मुसलमान एक पक्ष में रहे और अंग्रेज दूसरे पक्ष में रहे। इनमें बल और कपट की लड़ाई रही। हिन्दू मुसलमान अपने हक के लिए बलपूर्वक लड़ते थे और अंग्रेज उनमें फूट डालकर कपट से उनका मुकाबला करते थे। इस समय देश का विभाजन देशी और परदेशी के रूप में रहा। हिन्दू-मुसलमान देश के माने जाते थे और अंग्रेजों को परदेशी या विदेशी कहा जाता रहा। यह संघर्ष भी दो सौ वर्षों तक चला।

सन् १९४७ में क्रान्तकारियों के भय से (जब सरदार ऊधमसिंह ने माइकल ओ डायर और मदन लाल धींगरा ने कर्नल वायली को इंग्लेण्ड में बैठे गोली से उड़ा दिया) अंग्रेजों ने सोचा कि हम तो इंग्लैण्ड में बैठे भी सुरक्षित नहीं हैं तथा सुभाष बाबू की सेना आजाद हिन्द फौज का कोहिमा और मणिपुर तक पहुँचने का भय भी उनको सता रहा था । सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अंग्रेजों का अपनी सेना में भर्ती भारतीय सैनिकों पर से भी विश्वास उठ गया था साथ ही महात्मा गाँधी का अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन से भी देश में जागृति आ गई थी। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों ने भारत छोड़ना ही उचित समझा। पर भारतीय नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण अंग्रेज मुसलमानों को पाकिस्तान दिलाने में सफल हो गए और भारत के लिए एक विनाश का काँटा बोकर चले गए, जिसका दर्द हमें अभी तक सता रहा है और यह जब तक रहेगा तब तक दर्द बढ़ता ही जायेगा। इसमें और भी अधिक विनाशकारी विचार उभर कर आये-वे बहुसंख्यक अल्पसंख्यक के आधाार पर साम्प्रदायिक और असाम्प्रदायिक की भावना। पहली बात तो यह है कि पाकिस्तान बनाना ही नहीं चाहिए था। जब पाकिस्तान मुसलमानों को अलग दे दिया तब उनको भारत में रखने की क्या जरूरत थी? हमारे देश के शीर्ष नेताओं की दूरदर्शिता इसी में थी कि पाकिस्तान देने के साथ ही हिन्दुओं को पाकिस्तान से बुला लेते और हिन्दुस्तान से सब मुसलमानों को पाकिस्तान भेज देते। भारत का सदा के लिए सिरदर्द मिट जाता। वीर सावरकर, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ अम्बेडकर, यहाँ तक कि जिन्ना ने भी कहा था कि आबादी की अदला बदली कर लेनी चाहिए परन्तु महात्मा गाँधी को विश्व का मसीहा बनना था और पंडित नेहरू को कांग्रेस का राज्य लेना था। जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान में हिन्दुओं को मार दिया गया या निकाल दिया गया पर भारत में मुसलमानों को केवल रख ही नहीं लिया बल्कि उनको भारत के नागरिक मानकर वोट देने का पूरा अधिकार भी दे दिया।

गाँधी जी ने पहले ही मुसलमानों को खुश करने के लिए तुष्टीकरण की नीति काफी अपना रखी थी। आजादी के बाद तो कांग्रेस ने और अधिक वोटों के लिए तुष्टीकरण की नीति अपना ली। नतीजा यह हुआ कि भारत में मुसलमानों की माँगे बढ़ गईं और उन्हें पूरा करने के लिए अल्पसंख्यक बहुसंख्यक दो समुदाय बन गए और देश साम्प्रदायिक व असाम्प्रदायिक दो भागों में विभाजित हो गया। जो देश का हित चाहने वाले थे उन्हें साम्प्रदायिक और देशद्रोही कहा जाने लगा। जो देश का हित न चाहकर अपना या अपनी पार्टी का हित चाहते थे और मुसलमानों का उचित या अनुचित पक्ष लेते थे उन्हें देश हितैषी और असाम्प्रदयिक समझा गया। इसीलिए कांग्रेस समेत और कई पार्टियाँ जैसे सीपीआई, सीपीआईएम, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, बहुजन समाज पार्टी व तृणमूल कांग्रेस ऐसे दल बन गए और अपने दल को शासन में लाने के लिए मुसलमानों को अपने पक्ष में लाने हेतु इन्होंने तुष्टीकरण की होड़ लगा दी। इससे मुसलमानों को और अधिक बढ़ावा मिल गया। आज सभी स्वार्थी दल अपने दल को बढ़ाने के लिए मुसलमानों को तो खुश रखना चाहते ही हैं साथ ही गुण्डे, बदमाशों, चोरों, डकैतों लुटेरों, हत्यारों तथा समाज विरोधी तत्वों को भी पैसों के बल पर उनको एमएलए, एमपी का अपनी पार्टी का टिकट देकर उन्हें अपने पक्ष में ले आये हैं जिससे देश में चारों ओर लुटेरों डकैतों, हत्यारों, गुण्डे, बदमाशों और असामाजिक तत्वों का विधानसभाओं और संसद में आधिपत्य हो गया है। उसी से देश में अराजकता बढ़ गई और चारों और रिश्वत, अपराधीकरण तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया। आज स्थिति यह हो गई है कि देश में गुण्डे बदमाशों, लुटेरों डकैतों, हत्यारों व अपराधिक तत्वों का नंगा नाच हो रहा है और पूरा देश भ्रष्टाचार के पाप में डूबा हुआ है। देश के नेताओं, मंत्रियों, सांसदों व ऑफिसरों को अपनी जेब भरने के अतिरिक्त देश हित का किसी को भी ध्यान नहीं है। इस समय देश की स्थिति इतनी अधिक नाजुक बन गई है कि अब अन्य सभी विभाजनों को छोड़कर केवल भारतीय और अभारतीय विभाजन होने की आवश्यकता है। जो व्यक्ति भारत की हानि-लाभ तथा दुःख-सुख को अपनी हानि-लाभ व दुख सुख समझता है वही सच्चा भारतीय है, उसी का सम्मान होना चाहिए और उसी को वोट देने का अधिकार होना चाहिए चाहे वह किसी भी धर्म, जाति व प्रान्त का हो और जो इसके विपरीत है वह चाहे किसी भी धर्म जाति व प्रदेश का हो वह देशद्राही है, दण्डनीय है और उसको वोट देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। तभी देश की विधानसभाओं में तथा संसद में अच्छे, ईमानदार सत्यवादी परोपकारी और देशभक्त लोग जा सकेंगे और उन्हीं लोगों के हाथों में देश सुरक्षित रह सकेगा एवं तभी देश उन्नत और समृद्धशाली होकर अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सकेगा। अन्यथा देश का पुनः गुलाम होना तो निश्चित है।

डिप-डिप

- अशोक आर्य

चाय आज भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रचलित पेय पदार्थ है। १६ वीं शताब्दी में भारतीय इस पेय से परिचित भी नहीं थे। चीन में चाय का उत्पादन होता था। अंग्रेजों ने अपने शासन के दौरान चीन से बीज तथा तकनीक लेकर दार्जिलिंग, आसाम आदि में चाय का उत्पादन प्रारम्भ किया। आज भारत विश्व में चाय का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। १९५० तक भारत में लोक व्यवहार में चाय का प्रचलन ना के बराबर था। पर आज स्थिति यह है कि चाय की ७० प्रतिशत खपत भारत में होती है। चाय बोर्ड ने इस स्थिति को लाने हेतु अथक प्रयास किए।

अपने आर्य समाज के क्षेत्र में चाय सेवन को व्यसन माना जाता है तथा स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक। यह दृष्टिकोण एकदम तथ्यहीन भी नहीं है। यद्यपि वर्तमान शोधों के अनुसार जो तथ्य सामने आए हैं तदनुरूप चाय, विशेष रूप से ग्रीन टी (चाय के दो रूप ज्यादा प्रचलित हैं। १. नान फरमेण्टेड-ग्रीन चाय २. फरमेण्टेड ब्लैक चाय) अनेक बीमारियों का निरोध करने में सक्षम है। एक खाद्य वैज्ञानिक होने के नाते मैं इन तथ्यों की सहसा अवहेलना भी नहीं कर सकता पर चाय के गुणावगुण पर विचार करना इस आलेख में मेरा उद्देश्य नहीं है।

खाद्य उद्योग में क्रान्तिकारी शोध और तदाधारित परिवर्तन हो रहे हैं ताकि खाद्य पदार्थों को अधिक देर तक खाने योग्य बनाए रखा जा सके तथा साथ ही बदलती हुई जीवन शैली के अनुरूप सुगमता से उसका उपयोग कर सकें। पति पत्नी दोनों अपने अपने काम पर सुबह जल्दी निकलते हैं रात देर से आते हैं। किसी के पास उतना समय नहीं है कि पारम्परिक रूप से खाना तैयार करे। अतः ऐसे रॉ मेटीरियल को विकसित किया जा रहा है जिसे पानी में बस डालो या माइक्रोवेव में १-२ मिनिट रख लो। खाना तैयार। अनेक प्रकार के मिक्स तैयार किए गए हैं। रेडी टू सर्व तथा इन्सटेंट शब्द खाद्य पदार्थ के संदर्भ में इसी आवश्यकता की उपज हैं। चाय के लिए टी बैग्स ऐसी ही देन है। टी बैग्स स्वास्थ्य के लिए कितने हानिकारक हैं, यह विश्लेषण ही प्रस्तुत आलेख का हेतु है।

इससे पूर्व कि मुख्य विषय को प्रस्तुत करें चाय के बारे में प्रचलित दो मनोरंजक किंवदन्तियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दें। कहा जाता है कि एक बौद्ध भिक्षु

अनेक पाठक संभवतः न जानते हों कि सत्यार्थ-सौरभ के सम्पादक और न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एक वरिष्ठ खाद्य विश्लेषक रहे हैं। खाद्य पदार्थों में नित नई नई मिलावटों से जनता त्रस्त है। इस बारे में सरल आलेखों की कमी प्रत्यक्ष अनुभव होती है। अतः हमारी प्रार्थना पर श्री आर्य द्वारा लिखित यह लेख प्रस्तुत है। आशा है पाठकों को उपयोगी जान पड़ेगा। भविष्य में भी समय-समय पर ऐसे लेख सत्यार्थ सौरभ में आमजन के लाभार्थ प्रस्तुत किये जायेंगे।

- भवानी दास आर्य
मन्त्री-न्यास

ने यह संकल्प लिया कि वह ७ वर्ष तक जागकर बौद्ध धर्म तथा बुद्ध की शिक्षाओं का अनुष्ठान करेगा। तीसरे वर्ष पश्चात् उसे बड़ी नींद आने लगी। उसने वहीं के एक पौधे की पत्तियाँ खा लीं। आश्चर्य कि उसकी निद्रा उड़ गई। फिर उसने ७ वर्ष तक उन पत्तियों का प्रयोग कर अपना संकल्प पूरा किया।

इसी प्रकार एक कथा और आती है। एक समय चीन का राजा जंगल में गया। जब वह बहुत थक गया तो विश्राम करने लगा। उसके लिए पानी उबाला जा रहा था। संयोग से वहाँ एक पौधे की पत्तियाँ पानी में गिर गईं। जब राजा ने उस पानी को पिया तो गजब की स्फूर्ति अनुभव की। यह जंगली चाय थी। तत्पश्चात् चीन में चाय का प्रचलन शुरू हुआ।

यहाँ चाय के दो गुण भी प्रकट हुए

१.तन्द्रा दूर करना।

२. स्फूर्ति पैदा करना।

पुनः यह भी कहा जा सकता है कि अप्राकृतिक रूप से तन्द्रा दूर करना तथा स्फूर्ति पैदा करना दोनों हानिकारक हैं। अस्तु!

हमें बात टी बैग्स की करनी है। कागज के बने छोटे छोटे बैग्ज में एक कप के अनुरूप चाय की पत्ती भरी होती है। आपने एक कप गर्म पानी में बस इस बैग को ५-७ बार 'डिप' करना होता है। चाय तैयार।

यहाँ हमें सावधान होने की आवश्यकता है। इस टी बैग में ऐसे तत्त्व उपस्थित हो सकते हैं जो पानी के संपर्क में आकर ऐसा रसायन बनाते हैं जिससे कैंसर हो सकता है। कागज पानी के संपर्क में आकर तुरन्त गल न जाय अतः कागज को दृढ़ता प्रदान करने हेतु (Epichlorohydrin) का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग पेपर कॉफी फिल्टर में भी किया जाता है। जब एपीक्लोरोहाइड्रिन युक्त टी बेग गर्म पानी में डुबाते हैं तो (3-MCPD) नामक रसायन बनता है जो कि कैंसर पैदा करने वाले रसायन के रूप में जाना जाता है।

एक और भी समस्या की ओर ध्यानाकर्षित करना उचित होगा। बैग में प्रयुक्त कागज लकड़ी तथा वनस्पति की लुगदी से बनाया

जाता है। इस प्रकार तैयार कागज का रंग लिग्निन के कारण भूरा होता है सफेद नहीं। कागज के रंग को सफेद करने के लिए इसे क्लोरीन से साफ करते हैं। परन्तु इस प्रक्रिया में टी बैग का कागज कुछ ऐसे जहरीले क्लोरीनेटेड रसायनों से युक्त हो जाता है जो मानव स्वास्थ्य के लिए अतीव हानिकारक हैं।। इनमें सर्व प्रमुख डायोक्जिन (Dioxin) है। डायोक्सिन की कितनी मात्रा कैंसर पैदा कर सकती है अथवा कितनी मात्रा टोलरेबल हो सकती है यह ठीक से नहीं कहा जा सकता। ६० के दशक तक इस हेतु Elementary Chlorine प्रयोग में लायी जाती थी जो लिग्निन को तो दूर कर देती थी परन्तु Chloroform, Dioxin तथा Furan जैसे जहरीले रसायनों का निर्माण कर देती थी। आजकल क्लोरीन डाई-आक्साइड (clo_2) का प्रयोग करते हैं जो अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित है।

ब्लीचिंग का एक नया तरीका प्रचलन में आ रहा है जिसमें ऐसे रसायनों का प्रयोग होता है जो क्लोरीन युक्त नहीं होते हैं। यह प्रक्रिया Processed chlorine free bleaching (PCF) कहलाती है। पर यहाँ ध्यान रखने वाली बात ये है कि कुछ निर्माता रिसाइकिल्ड पेपर का प्रयोग कर लेते हैं जिनमें डायोक्सिन आदि पूर्व में हैं।

अतएव जो निर्माता विर्जिन वुड पल्प (Virgin wood pulp) लेकर उसमें पूर्णतः क्लोरीन रहित रसायन Per acetic acid (CH3cooo4) oxygen(O_2), Ozone(O_3) एवं हाइड्रोजन पर आक्साइड ($H2O_2$) का प्रयोग करते हैं वे टी बैग सुरक्षित कहे जा सकते हैं।

ध्यातव्य है कि कुछ शोधों में ४.७६ पीपीटी तक Dioxin पाया गया है।

डायोक्सिन के खतरेः- डायोक्सिन शरीर में फेट टिश्यू (Fat Tissue) में एकत्रित हो जाता है तथा ७ से ११ वर्ष तक के लम्बे समय तक यह संग्रहित होते रहने से मात्रा बढ़ती जाती है इससे हारमोन तंत्र गड़बड़ा जाता है, सन्तति उत्पन्न करने की क्षमता कम हो जाती है। असामान्य व्यवहार, जन्मगत अक्षमताएँ, कैंसर इसके घातक दुष्परिणाम हैं। सर्वाधिक चिन्तनीय है कि भ्रूण को तथा शिशु को माँ के दूध के माध्यम से हानिकारक तत्व पहुँच जाते हैं।

यह बात नहीं है कि सभी टी बैग निर्माता क्लोरीन ब्लीचिंग वाले कागज का उपयोग करते हैं। स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणामों को दृष्टिगत् रखते हुए एक 'क्लोरीन फ्री प्रोडक्ट एसोसियेशन' का निर्माण किया गया है जो हानिरहित टी-बैग को PCF चिह्न प्रदान करती है यही चिह्न सुरक्षित टी-बैग्स पर मिल सकता है।

अतएव यदि चाय-पान करना ही है तो उपभोक्ता ध्यान रखें कि Dip-Dip का आनन्द लें तो Tea-Bag पर उपरोक्त प्रमाणन देख लें। अन्यथा पारम्परिक चाय ही उपयोग में लावें, वही बेहतर है।

- नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

❑❑❑

BANANA 2 HEALTH

Temperature control: Many other cultures see bananas as a "cooling" fruit that can lower both the physical and emotional temperature of expectant mothers. In Thailand , for example, pregnant women eat bananas to ensure their baby is born with a cool temperature.

Smoking &Tobacco Use: Bananas can also help people trying to give up smoking.. The B6, B12 they contain, as well as the potassium and magnesium found in them, help the body recover from the effects of nicotine withdrawal.

Strokes: According to research in The New England Journal of Medicine, eating bananas as part of a regular diet can cut the risk of death by strokes by as much as 40%!

Warts: Those keen on natural alternatives swear that if you want to kill off a wart, take a piece of banana skin and place it on the wart, with the yellow side out. Carefully hold the skin in place with a plaster or surgical tape!

So, a banana really is a natural remedy for many ills. When you compare it to an apple, it has four times the protein, twice the carbohydrate, three times the phosphorus, five times the vitamin A and iron, and twice the other vitamins and minerals. It is also rich in potassium and is one of the best value foods around. So maybe its time to change that well-known phrase so that we say, "A banana a day keeps the doctor away!"

❑❑❑

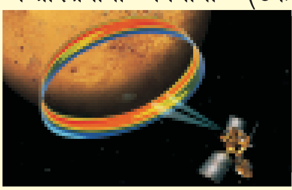

चन्द्रमा में जल का अस्तित्व

डॉ. ब्रजमोहन जावलिया

वेद सब सत्य विद्याओं का आगार कहा गया है। भारतीय मनीषी वेद को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान घोषित करते हैं। हमारे देश के आचार्य और आविष्कारक ऋषि महर्षि एक स्वर से कहते आये हैं कि हमारी धर्म-व्यवस्था, कला और विद्या का उद्गम वेद ही में निहित है। धर्म के आदि प्रवर्तक मनु ने वेद को अखिल धर्म का मूल[१] घोषित करते हुए कहा है कि वेद और शास्त्रों के ज्ञाता व्यक्ति ही सेना का नायकत्व, दण्ड और शासन व्यवस्था तथा राज्य संचालन आदि कुशलतापूर्वक कर सकते हैं।[२]

वेद रूप ज्ञान-विज्ञान के समुद्र का मंथन करके ही महामुनि भरद्वाज ने कला और यंत्र विद्या विषयक ग्रन्थ 'यन्त्र सर्वस्व' का प्रणयन किया था।[३]

इसी प्रकार चिकित्सा विज्ञान के आचार्य चरक आयुर्वेद का मूल भी वेद को ही मानते हैं।[४]

तात्पर्य यह है कि मनुष्यों ने जो भी ज्ञान प्राप्त किया है वह सब वेद से किया है।

वेद-विद्या के प्रकाण्ड पंडित आचार्य प्रियदर्शी आर्ष (ब्रह्ममुनि) ने स्वरचित वेद विद्या विषयक ग्रन्थ 'वैदिक ज्योतिषशास्त्र' में खगोल में स्थित ग्रह नक्षत्रों धूमकेतुओं और उल्कापिण्डों आदि पर वेद के साक्ष्य से प्रभूत प्रकाश डाला है।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक नित नये आविष्कृत यन्त्रों और अन्तरिक्षगामी विमानों (उपग्रहों) का आश्रय लेकर अन्तरिक्षीय ग्रहों की खोज में संलग्न हैं। वे अन्तरिक्ष में पृथ्वी के समान वातावरण वाले ग्रहों में मानव बस्तियाँ बसाने के लिए उत्सुक हैं। अतः वे वर्षों से इन ग्रहों में जीवन के लिए परमावश्यक तत्त्व पानी के अस्तित्व की खोज में लगे हुए हैं।

चन्द्रमा पर सर्वप्रथम पहुँचे अन्तरिक्ष यात्रियों के द्वारा पृथ्वी पर प्रेषित चित्रों में जल और जीवन के प्रमाण न दिखाई देने पर वे चिन्तित रहे हैं। नासा जैसी प्रख्यात् वैज्ञानिक संस्था भी वर्षों से चन्द्रमादि ग्रहों पर पानी की खोज में प्रयासरत रही, पर उसे भी सफलता नहीं मिली। इन ग्रहों पर पानी का अस्तित्व खोज निकालने का श्रेय भारतीय वैज्ञानिकों के भाग्य में लिखा था। भारत से मून (चन्द्र) मिशन पर प्रेषित किए गए चन्द्रयान ने चन्द्रमा की सतह पर पानी की मौजूदगी के ठोस प्रमाण अपनी भेजी गईं तस्वीरों के माध्यम से सर्वप्रथम पृथ्वी पर वैज्ञानिकों के पास पहुँचा दिया। इस यान में लगे नासा के उपकरण 'मून मिनरोलोजी मेजर(एम-३) ने चाँद की सतह पर ऐसे तत्त्वों की खोज की जिनसे वहाँ पानी के अस्तित्व के प्रमाण मिले। नासा के शीर्ष वैज्ञानिक कार्लपीटर्स द्वारा इसकी

पुष्टि किए जाने पर चन्द्रयान १ के परियोजना निदेशक एन. अन्नादुराई ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि के समाचार पर अपनी मुहर लगा दी।

अब नई खोज से पता चलता है कि चन्द्रमा पर उतना पानी हो सकता है जितना आज पृथ्वी पर है। यह चौंकाने वाली बात अपोलो अभियान के लाये एक पत्थर पर की गई शोध से पता लगी है। यह मानवयुक्त अपोलो- १७ यान चन्द्रमा से पत्थर लेकर पृथ्वी पर लौटा था। उस पत्थर के अध्ययन से कहा गया है कि चन्द्रमा में गैस के रूप में प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध हो सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि चाँद की परत में हमारी आशा से भी सौ गुना पानी हो सकता है जो चन्द्रमा की बाहरी सतह(सरफेस क्रस्ट) के नीचे मोटी परत के रूप में मौजूद है।[५]

भारतीय अन्तरिक्ष वैज्ञानिक जी माधवन नायर की मान्यता है कि चाँद के धरातल पर रजकणों या चट्टानों में वाष्प रूप में जमा पानी को प्राप्त करने के लिए चन्द्रयान-२ के साथ रोबर या रोबर का छोटा स्वदेशी उपकरण चन्द्रमा पर उतारा जायेगा।

वेद विद्या में निष्णात भारतीय विद्वान् अन्तरिक्ष में स्थित ग्रहों उपग्रहों से संबंधित अनेक वैज्ञानिक तथ्यों के साथ चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों पर पानी के अस्तित्व के विषय में सदैव आश्वस्त रहे हैं। वेद वाणी को उन्होंने कभी मिथ्या नहीं माना। उनका मानना है कि जल के अनेक रूप होते हैं। अतः इन ग्रहों में पार्थिव रूप में न सही पर किसी न किसी रूप में पानी का अस्तित्व अवश्य ही है। अन्तरिक्ष में मित्र (हाइड्रोजन) और वरुण (ऑक्सीजन) के परमाणुओं का घृताची नाम की अप्सरा (विद्युतशक्ति) निरन्तर संघात करते

हुए किसी न किसी रूप में अप् (जल) की संरचना करती रहती है। यजुर्वेद के अनुसार जल अन्तरिक्ष में विद्यमान मेघों का प्रकाशक है। उन वृत्रों का वध करके (छेदन करके) जल पुनः प्राप्त किया जा सकता है।[६] चन्द्रमा पर भी वृत्र विद्यमान है। अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि वहाँ मौजूद नहीं होगा। ऋग्वेद के अनुसार चन्द्रमा अन्तरिक्ष में सुपर्ण (सुन्दर पंख वाले) पक्षी के समान जल में विचरण करता है।[७] यजुर्वेद[८] और अथर्ववेद[९] भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। ऋग्वेद में तो और भी कहा गया है कि जल से युक्त स्वच्छ चन्द्र बिम्ब में सूर्य की रश्मियाँ(किरणें) प्रतिफलित होती हैं।[१०] शतपथ ब्राह्मण में तो चन्द्रमा को सौम्य अर्थात् जल धर्मवाला ही कहा गया है।[११]

ज्योतिष ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त में चन्द्रमा की हिमरश्मिवत् संज्ञा दी गई है।[१२] आर्यभट्टीय में चन्द्रमा को चन्द्रोजलम् कहकर उसमें तुहिन (वाष्प) वत् जलकणों का विद्यमान होना कहा गया है।

पुराण, उपपुराण, ज्योतिषादि ग्रन्थ तथा सभी शास्त्र स्वयं को वेद का ऋणी मानकर एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि उनमें वही कहा गया है जो वेद कहता है। भारतीय ऋषि मुनियों आचार्यों की उक्त मान्यता मात्र कल्पना नहीं कही जा सकती। उनकी अवधारणाओं में अवश्य ही लोकलोकान्तरों में गमनशील विमानों का उल्लेख रहा होगा जिनका उल्लेख

महर्षि भारद्वाज प्रणीत यन्त्र सर्वस्व ग्रन्थ के विमान प्रकरण में तथा महर्षि दयानन्द प्रणीत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकादि ग्रन्थों में किया गया है। इनके अतिरिक्त भी वैज्ञानिकों के आधारभूत टेलिस्कोपादि द्युलोक में नग्न चक्षुओं से न दिखाई देने वाले ग्रहादि पिण्डों को देखने के लिए करते रहे हैं जैसाकि ऋग्वेद में उल्लिखित तुरीय ब्रह्म नामक दूरवीक्षण नामक यन्त्र के उल्लेख से ज्ञात होता है। महर्षि अत्रि ने इस यन्त्र के द्वारा अन्धकाराच्छन्न सूर्य का निरीक्षण किया था।[१३]

ऋषि तुल्य वर्तमान कलियुग (या कलयुग) के वैज्ञानिक वेद में निहित सत्य का उद्घाटन कर एक महान् और स्तुत्य कार्य सम्पादित कर रहे हैं। साधुवाद के पात्र हैं ये सभी।

पाद टिप्पण

१.वेदोऽखिलोधर्ममूलम् - मनुस्मृति २।६

२.सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।। -मनु. १२।१००

३.निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधि भारद्वाजो महामुनिः।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्र सर्वस्व निरूपणम्।। वृहद्विमानशास्त्र मंग. श्लोक १०

४.वेदोह्यथर्वाण चिकित्सां प्राह -चरक सूत्रस्थान अध्याय ३०/२

५.राजस्थान पत्रिका (जस्ट उदयपुर २५.६.११)

६.वृत्रस्यासि कनीनक -यजुर्वेद ४।३

७.चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि -ऋग् १।१०५।१

८.यजुर्वेद -३३।९०

९.अथर्ववेद -१८।४।८९

१०.उदकमये स्वच्छेचन्द्रबिम्बे सूर्यकिरणा= प्रतिफलन्ति -ऋग्वेद१।८५।१५

११.शतपथ ब्राह्मण -६।३।२४

१२.तमास्थि विमर्दार्ध ग्रासादयं तु यथोदितम।
प्रमाणं वलनाभीष्ट ग्रासादि हिमरश्मिवत्। -सूर्य सिद्धान्त सूर्य ग्रहण १३

१३.स्वर्भानोरध यदिन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन्।
गूळहं सूर्यं तमसाव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः।। -ऋग्वेद ५।४०।६

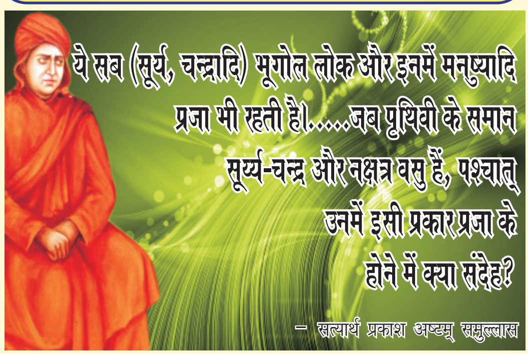

श्री अशोक आर्य का राजकीय सेवा से सेवानिवृत्ति पर अभिनन्दन

आर्य समाज,हिरणमगरी,उदयपुर द्वारा आयोजित विशेष समारोह में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य का वैदिक जगत् में उनके प्रशंसनीय योगदान हेतु अभिनन्दन, श्रीफल, उपरणा व अभिनन्दन पत्र भेंट कर किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में श्री आर्य ने अत्यन्त सरल व सरस शैली में चतुर्थाश्रमों की महत्ता का वर्णन किया। आरम्भ में आर्य समाज,हिरणमगरी की ओर से श्रीमती शारदा गुप्त ने स्वागत करते हुए श्री अशोक आर्य के आर्य जगत् को समर्पित व्यक्तित्व व कृतित्व का चित्रण किया एवं कहा कि महर्षि के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार के साथ ही सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के सम्पादन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका है। आर्य समाज हिरणमगरी की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया एवं कोषाध्यक्ष श्री पी.एन.जायसवाल ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया। उप प्रधान श्री के.के.सोनी ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री उमाशंकर अग्रवाल ने श्री अशोक आर्य के व्यक्तित्व पर स्वरचित कविता का पाठ कर अभिनन्दन स्वरूप कविता भेंट की। इस अवसर पर उदयपुर नगर के सभी आर्य समाजों के सदस्य, दयानन्द कन्या विद्यालय व डीएवी विद्यालय के शिक्षकगण,विद्यार्थी व प्रतिष्ठित विद्वद्जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

Cremation

Smt. Savita Sethi

Environmental pollution is a global problem and the whole humanity is worried. Each nation is trying its best to reduce the polluting factors in the interest of healthy human life. Space, Air, Water and earth are the areas affected by pollutant. Last two are easily recognized by human eyes but first two are also affected. Most people talk about pollution through excessive refrigeration, fuel burning, industrial pollution, and other such factors, but nobody has prominently reffered about the pollution caused by the dead bodies cremated in an unscientific manner.

One of the very neglected or unnoticed area is pollution created at cremation grounds. The other method of disposing the dead body such as burial is much dangerous to environment beside it consume vast ground. In Chandigarh, Prominent Aryasamaji and social activist savita sethi examined closely this issue. She learnt that harmful emissions of dioxins, furans, sulphur di oxide were emitted during the burning of human bodies which in microform spread widely in the environment.She also researched on net and found the existence of problem globely.

In the year 1873, an exhibition in Vienna displayed a cremation Furnace that was being used in Italy. Seeing this furnace a physician of queen Victoria of England, Sir Henry Thompson wrote a book 'Cremation-The treatment of body after death' and established a society named as 'Cremation Society of England'. In the year 1913 'Creamation of association of America ' was formed and by 1937 practically all European countries had National cremation associations or societies. 'The international cremation Fedration' has it's headquarter located in London.

In India 78% of the population consign the dead bodies to fire for cremation but they use very little Ghee and herb mixture(Samagri), hence the temperature of fire seldom exceed 300°C or 550 F that cause slower disintrigation of body and formation of much pollutants. Coming from Aryasamaji background Smt. Savita knows if Ghee and Samagri is added in burning process temperature of fire raises to 700°c thus expedite the burning process and minimize the evolution of pollutants. That is why Maharshi Dayanand Saraswati made it compulsory to use abundant quantity of Ghee and Samagri in cremation. He wrote that if the family is poor then it is the liability of society to provide the means because minimization of polluting gases is essential. Hence to save society at large , if family can't arrange the material, than society has to come forward.

If one is not using essential material at cremation , it is not always that they are poor. Most of the time this is lack of awarenwss. Ms Savita thought on the same line and to begin with she started carrying a small packet of Havan Samagri mixed with pure Ghee to offer on the pyre whenever she had to visit cremation grounds to attend any cremation. Making progress she made a small group with her three friends- Sudesh Gupta, Usha Ghai and Prem Duggal to carry on the mission.

The task was very difficult and very different. The people were totally ignorant of this problem and of the damage being caused by it to the environment of the town, but determined Savita did't left any stone unturned. Results are promising.

Now they have created a trust –'PARYAVARAN SANRAKSHAN NYAS' (registerd at Chandigarh) with nine trusties on board.

The trust has decided that on each cremation of any cast, creed or faith at the Chandigarh Crematorium the trust should contribute One kg. of Pure Ghee and five kgs. Of Havan Samagri (a mixture of organic herbes having ingredients which have Anti-pollutant, disinfectant, aromatic , nourishing and nutritive qualities.) to work as an effective anti-pollutant and thus save the city from such threatened possible pollution.

संस्कार विधि में महर्षि दयानन्द जी ने अन्त्येष्टि संस्कार के अन्तर्गत शवदाह हेतु न्यूनतम शव के वजन के बराबर घृत-प्रयोग का विधान किया है। अधिक तो कितना भी हो। कुछ लोग इसे Waste मानते हैं तथा बहुधा आर्य समाजी भी इस व्यवस्था का पालन नहीं करते। पर यह ऋषि-निर्देश पूर्णतः वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित तथा अन्त्येष्टि के फलस्वरूप होने वाले पर्यावरण-प्रदूषण को रोकने का एकमात्र साधन है। इसी कारण ऋषि ने लिखा कि जो कोई साधनहीन हो और उतने घृत का प्रबन्ध न कर सके तो समाज के लोग मिलकर इस व्यय का वहन करें। पृथ्वी को पर्यावरण-प्रदूषण से राहत दिलाने हेतु श्रीमती सविता जी ट्रस्ट बनाकर अनुकरणीय कार्य कर रही है। ऐसी सेवा सर्वत्र प्रारम्भ की जानी चाहिए।

– अशोक आर्य

मुर्दापरस्ती की दुनिया

प्रो. शामलाल कौशल

खाना, पीना, आराम करना, सुख-दुःख का अनुभव होना आदि यह सब जीते जी ही होता है। कई लोग स्वर्ग-नर्क की बातें करते हैं जिसका एहसास तो हमे जीते जी ही हो जाता है। मरने के बाद क्या होता है किसी को क्या पता?वैसे भी कहा गया है कि 'आप मरे, जग प्रलय' और बात भी ठीक है। जब आदमी मर जाता है, सभी यही चाहते हैं कि उसे जल्दी से जल्दी जला दिया जाये, पानी में बहा दिया जाये या फिर जमीन के नीचे दफना दिया जाये। सभी मरे हुए प्राणी से डरते हैं कि कहीं भूत बनकर हमें चिपट ही न जाये। लेकिन कटु सत्य है कि हमारे यहाँ मुर्दापरस्ती का बोलबाला है। यहाँ लोग जीते जी माता-पिता, भाई बंधुओं को बिल्कुल नहीं पूछते लेकिन उनके मरने के बाद उनकी शान में बड़े-बड़े प्रशंसा वाले विशेषण का प्रयोग करके अपने आपको उसका सबसे बड़ा हितकारी अथवा चाहने वाला होने का पाखण्ड करते हैं। आजकल के अधिकांश बेटे जीते जी अपने माता-पिता की परवाह नहीं करते, रहने के लिए उचित स्थान, खाने के लिए पर्याप्त तथा बढ़िया भोजन नहीं देते, बीमार होने पर दवाई का प्रबंध नहीं करते, उनके साथ दो मिनट बैठकर प्रेम के दो बोल बोलें इसके लिए उनके पास समय ही नहीं। हाँ, बेटे तथा बहुएँ बुजुर्गों की धन सम्पति जरूर हड़प करके या तो उन्हें वृद्धाश्रम में भेजने का प्रबंध करते हैं पर फिर उनसे तंग आकर मरने की दिन रात दुआ करते हैं। इस तरह दुःखी माँ बाप जब परलोक सिधार जाते हैं तो पाखंडी बेटे बेटियाँ तथा बहुएँ सिर तथा छाती पीट-पीटकर, चीख चिल्लाकर अपने आपको सबसे ज्यादा दुःखी होने का आडम्बर करते हैं, उनके नाम पर महंगे भोज आयोजित करते हैं, दान पुण्य करते हैं, तीर्थ करते हैं। उठावनी तेरहवीं की रस्म के समय उच्च पदों पर आसीन या व्यापार में सुस्थापित बेटों, बेटियों के रिश्तेदार जब परम्परा के तौर पर एकत्रित होते हैं, तो मंच पर, बारी-बारी से आकर लगभग सभी भाषणकर्ता बार-बार यही बात दोहराते हैं कि 'स्वर्गवासी मोहन लाल सचमुच ही भाग्यशाली थे जो उन्होंने श्रवणकुमार जैसे बेटों को जन्म दिया तथा उन्होंने अपने माता-पिता की तन मन धन तथा सच्चे अर्थों में जी जान से सेवा की। यह सुनकर अधिकांश लोग एक तरफ मुँह करके तकरीबन

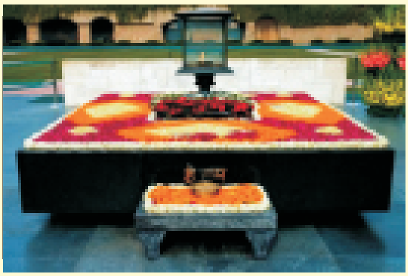

मुस्करा देते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उन्होंने माता-पिता को किस तरह जलील किया, उनकी अवहेलना, अवज्ञा तथा मानसिक उत्पीड़न किया। लेकिन यह दुनिया है। यहाँ जीते जागते हाड़-मांस के लोगों की नहीं मुर्दा शरीरों की पूजा होती है। जो लोग जिन्दा माँ-बाप, भाई-बहनों को देखकर भी राजी नहीं होते, मरने पर वही उनके गुणगान करते हैं, आपसी सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों की बातें करते हैं, उनके फोटो पर फूल चढ़ाते हैं, उनके मरने पर दान-पुण्य, श्राद्ध आदि करके अपने आपको अच्छा कहलवाने का आडम्बर करते हैं। क्या कभी मुर्दे भी कुछ बोलते हैं, खाते हैं, पीते हैं या आशीर्वाद देते हैं? लेकिन नहीं, हमारे यहाँ मुर्दापरस्ती का रिवाज है। लोग श्मशान में अपने माता-पिता तथा अन्य बुजुर्गों के नाम के पत्थर लगवाते हैं, बुत बनवाते हैं। इस सारे से उन बजुर्गों का क्या फायदा? अगर जीते जी उनके साथ उनके परिवार वालों का व्यवहार अनादर, उपेक्षा, तिरस्कार तथा अवहेलना वाला रहा हो। हमारे देश में लोग गाँधी, नेहरू, आदि के नाम से राजनीति करके सत्ता की सीढ़ियों पर पहुँचते हैं। हमने अपने स्वतन्त्रता सेनानियों तथा अन्य बड़े राष्ट्रीय नेताओं की संसद भवन में फोटो तथा देश के अन्य भागों में मूर्तियाँ तो स्थापित कर रखी हैं लेकिन उनके विचारों तथा उसूलों पर अमल बिल्कुल नहीं करते। ऐसी मानसिकता के कारण न केवल हम स्वयं अपने साथ छल कपट करते हैं, बल्कि उन महानात्माओं का भी अपमान करते हैं। अच्छी बात तो यही है कि हमें अपने माता-पिता तथा अन्य बुजुर्गों को उनके जीते जी उचित सम्मान तथा व्यवहार से खुश करना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए, उनका आज्ञाकारी होना चाहिए, जिससे वे प्रसन्न होकर हमें तथा हमारी सन्तान को समृद्धि, दीर्घायु, प्रसन्नता तथा प्रसिद्धि के लिए आशीर्वाद देंगे। अगर हमने उनकी सेवा नहीं की तो उनके मरने के बाद उनके नाम से किया गया प्रत्येक काम फरेब, धोखा तथा आडम्बर ही माना जायेगा जो कि हमारे लिए जग हँसाई का कारण बनेगा।

❑❑❑

मकान न. ६७५-बी/२०
राजीव निवास, शक्ति नगर
ग्रीन रोड, रोहतक

आचार्य योगेन्द्र शास्त्री "निर्मोही"

सँभल- आगे खाई है

आज समाज में बढ़ती हुई बलात्कार की घटनाओं से प्रत्येक सद् नागरिक चिन्तित है। सार्वजनिक फाँसी आदि की सजा से इसे एक सीमा तक रोका जा सकता है। यह भी विचारना आवश्यक है कि वर्तमान में इनकी अत्यधिक वृद्धि का मूल कारण क्या है? चारों ओर से स्वर गूँज रहा है कि समाज की मानसिकता को बदलना होगा। अर्थात् नारियों के प्रति पुरुषों का व्यवहार पहले ऐसा नहीं था जो अब हो गया है। व्यक्ति की अच्छी अथवा बुरी मानसिकता ही उसके कर्मों का आधार है। वैदिक आचार्यों का अनुभूत कथन है कि **'यद्मनसा ध्यायति तत् कर्मणा करोति'** अर्थात् जो व्यक्ति जैसा मन में संस्कार रखता है वैसा ही अच्छा व बुरा कर्म करता है। महाभारत काल में दुर्योधन ने कहा था- **'जानामि धर्मम् न च मे प्रवृत्ति'** अर्थात् मैं धर्म को जानता हूँ परन्तु अपने मन के गहरे कुसंस्कारों में बँधे होने के कारण पाप कर देता हूँ क्योंकि मेरे हृदय में विराजमान मन रूपी महाशक्ति मुझे पाण्ड्वों के विरुद्ध प्रेरित करती है। दुर्योधन का मन गन्दा जिसके कारण हुआ उसके मामा शकुनि और कुछ पिता धृतराष्ट्र के कारण। यह कटु सत्य है कि जो व्यक्ति जिस वातावरण में अथवा व्यक्तियों में अधिक रहता है, जैसी बातें सुनता तथा देखता है वह वैसा ही बन जाता है। इन्द्रियसंयम, ब्रह्मचर्य, प्रभु की व्यापकता तथा उसके द्वारा बिना क्षमा पापकर्म का फल ये सदैव स्मरण रहें तो बात ही क्या है। बस आसपास रहने वाली हमारी माँ-बहन-बेटी है, नारियाँ राष्ट्र की आधार शिला हैं, वे राष्ट्र की जननी ही नहीं अपितु अपने सुधार्मिक-अनुशासित तथा देशभक्ति पूर्ण संस्कारों और वातावरण से अच्छे परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण करती हैं। हमें सदा नारी जाति के प्रति आदर युक्त विनम्रता की मानसिकता बनानी चाहिए। परन्तु सुमानसिकता कहने मात्र से नहीं, संस्कारों, सद्वातावरण की निरन्तरता से बनती है। यदि कहने मात्र से व्यक्तियों की विचारधारा बदलने वाली होती तो आज दूरदर्शन पर अनेक नामी प्रवचनकर्त्ताओं के प्रवचनों से भारत स्वर्ग बन गया होता। क्या अंगप्रदर्शन ही प्रगति व बराबरी का प्रमाणपत्र है? मानसिकता का परिवर्तन व्यवहारिक आचरण पर निर्भर करता है एवं उसका सच्चा गहरा संस्कार विद्यार्थी काल के कोमल जीवन पर पड़ता है।

अपनी माँ-बहन-बेटी के समान महिला मात्र के प्रति श्रेष्ठ मानसिक संस्कार डालने वाला किसी पाठ्यक्रम का 'पाठ' प्रथम से १२वीं कक्षा अथवा किसी स्कूल कॉलेज वा अन्य भारत सरकार द्वारा संचालित संस्थान में क्या पढ़ाया जाता है? जब यह पाठ प्राचीन आर्यावर्त्त (भारत) में पढ़ाये जाते थे तब कभी एकाध दुष्ट मानसिकता की घटना होती थी। जनता जागे कि मादापशु लज्जामुक्त होने से नग्न रहती है, एवं नरपशु (इच्छा बिना) बलात्भोग नहीं करते। मर्यादा ही रोकेगी जो हर गली, हर ग्राम, हर नगर, हर सड़क व हर संस्थान में बलात्कार हो रहा है। गंदी मानसिकता के परिवर्तन हेतु, कितने घर, विद्यासंस्थान अथवा कार्यसंस्थान हैं जहाँ की दीवारों पर चरित्र, ब्रह्मचर्य, संयम अथवा महिलाओं को माँ बहन बेटी और पुरुषों को पिता चचा व भाई समान देखने की शिक्षा दी गई है? कितनी ऐसी लड़कियाँ महिलायें हैं जो अपने आप को बहन, दीदी, चाची व माता का सम्बोधन सुनने पर प्रसन्न होंगी? कितने ऐसे लड़के व पुरुष हैं जो लड़कियों एवं महिलाओं द्वारा भाई, चाचा, मामा अथवा पिता का सम्बोधन सुनने पर प्रसन्न होंगे? आज यदि कॉलेज में कोई पवित्र मानसिकता वाले लड़के अथवा लड़कियाँ अपने सहपाठियों को भाई वा बहन कहके पुकार दे तो उनकी हँसी उड़ाकर, अपमानित कर दिया जाता है कि यह कितने पिछड़े हुए विचारों का है। ध्यान रहे सदोपदेश से सद्संस्कार व उसके अनुसार क्रिया करने से ही मानसिकता तथा वातावरण बनता है। दुःख से कहना पड़ता है कि अंग्रेजियत तथा अकबरी दुष्टता ने पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य भाई-बहन, पिता-पुत्री की पावन भावना को समाप्त करके महिलाओं को चाची मस्त, मुन्नी बाई, जलेबी बाई, हलकत जवानी, फेवीकॉल व शीलाबाई बना दिया है एवं पुरुषों की मानसिकता को उनका भोक्ता। क्या इन सब अश्लीलता तथा कामुकता पूर्ण नग्न नृत्यों और अर्धनग्न अंग्रेजियत से पुरुषों की मानसिकता अच्छी बन सकती है?क्या भाई-बहन के स्थान पर हाय-बाय

कहने से बलात्कार घटेंगे? ध्यान रहे घर की माँ-बहन-बेटी भी महिला है परन्तु उसके प्रति इसलिए मानासिकता पवित्र होती है क्योंकि वहाँ मन में बाल्यकाल से उनके प्रति माँ-बहन-भाई कहने और समझने की भावना भरी जाती है। बलात्कारों को ६६ प्रतिशत समाप्त करने हेतु 'नारियाँ' धरती भर के करोड़ों पुरुषों को योगी बनाने का झूठा स्वप्न न देख कर नग्न कुप्रदर्शन व योग्य चीज बन कर परोसने का प्रयास न करे। पैरों को काँटो से बचाने हेतु सम्पूर्ण धरा पर चमड़ा चढ़ाने की अपेक्षा अपने पैरो को जूतों से ढ़ककर रखना ही बुद्धिमत्ता है। भारतीय संस्कृति में शृंगार का विरोध नहीं, नग्नता का विरोध है। किसी को 'लवण भास्कर' खिलाकर भूख हटाने की व जमालघोटा खिलाकर शौचालय न जाने कि बात करना महामूर्खता है। वैदिक आचार्यों का अनुभूत विज्ञान है कि कार्य का होना कारण पर निर्भर करता है। केवल कहने से मानसिकता नहीं बदलती। क्या नारी स्वतन्त्रता अल्प वस्त्रों में सार्वजनिक स्थान पर जाने में है? पेट्रोल व आग को बिना सुरक्षित कवच के साथ रखकर न जलने की बात कहने वाले क्या बुद्धिमान हैं? लड़के-लड़की का अनैतिक मिलन, अश्लील नग्न सिनेमा, सीरियल-विज्ञापन व शराब पर प्रतिबन्ध लगे। अच्छे वातावरण से अच्छी मानसिकता ही बलात्कार का पूर्ण समाधान है

❑❑❑

सत्यार्थ प्रकाश पाठान्तर के क्रम में

श्री सम्पादक जी! प्रसिद्ध समाचार पत्र पंजाब केसरी में 'धर्म कर्म' कॉलम के अंतर्गत सत्यार्थ प्रकाश अविकल रूप से क्रमशः दिया जा रहा है। परन्तु मैंने अनेक बार से यह नोट किया है कि इसमें मनमर्जी से परिवर्तन करके बहुत से प्रकरण छापे जा रहे हैं। अतः जहाँ इसके सम्पादक श्री अश्विनी जी सत्यार्थ प्रकाश को पाठकों के समक्ष रख एक स्तुत्य कार्य कर रहे हैं वहीं सत्यार्थ प्रकाश में काँट छाँट करके लेखक व आर्यों की भावनाओं के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ कर रहे हैं। आपसे स्वयं से भी और आपके पत्र के माध्यम से समस्त आर्य जगत् से निवेदन करना चाहता हूँ कि इस विषय में अपने-अपने प्रभाव का उपयोग कर अश्विनी जी को बाध्य करें कि वे सत्यार्थ प्रकाश को ज्यों का त्यों देने का श्रम करें। मैंने अनेक रजिस्टर्ड पत्र एतद् विषयक श्री अश्विनी जी को लिखे हैं। विशेष दृष्टव्य १३६,१४० और १४१ वीं किश्त हैं जो ग्याहरवें समुल्लास के अंतर्गत मूर्तिपूजा विषयक हैं। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में मूर्ति पूजा के १६ दोष बताये हैं। परन्तु पंजाब केसरी के 'धर्म-कर्म' कॉलम के अंतर्गत १४१ वीं किश्त में मात्र एक दोष प्रकाशित किया है बाकी १५ गायब। सत्यार्थ प्रकाश में ऐसी काँट छाँट अनैतिक ही नहीं अवैधानिक भी है। **सम्पर्क-महेश सोनी, मंत्री आर्य समाज, बीकानेर**

आर्य जगत् की सुषुप्ति ऋषि ग्रन्थों को हेर फेर कर प्रकाशन करने में मुख्य कारक है। अश्विनी जी समर्थ आर्य परम्परा से हैं। उन्हें तो हम पृथक् से पत्र लिखकर निवेदन करेंगे ही। आर्य जगत् की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों व विद्वानों से निवेदन है कि इस ओर ध्यान देकर अश्विनी जी का ध्यान इस 'हेरफेर' की ओर आकर्षित कर सत्यार्थ प्रकाश का पूर्ण पाठ प्रकाशित करने की ओर दबाव बनायें। ध्यानाकर्षण के लिए व सतत् इस हेर फेर का विरोध करने के लिए श्री महेश सोनी बधाई के पात्र हैं। इस क्रम में श्री सोनी जी से आर्य भाई बहिन सम्पर्क कर सकते हैं। इनका मोबाइल नं. ०६८२८६१४५६७ है।

महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा-नवलखा महल

नवलखा महल जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण हेतु जो महानुभाव अर्थ सहयोग भेज रहे हैं, उनका आभार प्रदर्शित करते हैं। **छोटी-बड़ी जो भी आहुति हो निःसंकोच इस पवित्र कार्य हेतु अर्थ सहयोग प्रदान करें।**

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर

हिन्दी दिवस पर विशेष

न्यायालय की भाषा?

श्याम रुद्र पाठक

हिंदी को व्यवहार में लाने की सरकारी अपील आपने रेलवे स्टेशनों तथा अन्य सरकारी कार्यालयों में पढ़ी होगी परन्तु क्या आपको पता है कि विश्व के इस सबसे बड़े प्रजातंत्र में आजादी के पैंसठ वर्षों के पश्चात् भी सर्वोच्च न्यायालय की किसी भी कार्यवाही में हिंदी का प्रयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है? और यह प्रतिबंध किसी अधिकारी की मनमानी की वजह से नहीं बल्कि भारतीय संविधान की व्यवस्था के तहत है। संविधान के अनुच्छेद ३४८ के खंड(१) के उपखंड(क) के तहत उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी भाषा में होंगी। यद्यपि इसी अनुच्छेद के खंड(२) के तहत प्रावधित है कि किसी राज्य का राज्यपाल उस राज्य के उच्च न्यायालयों में हिंदी भाषा या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग राष्ट्रपति की पूर्व सहमति के पश्चात् प्राधिकृत कर सकेगा। यद्यपि इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिग्री या आदेश पर लागू नहीं होगी। अर्थात् इस खंड के तहत उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषा के सीमित प्रयोग की ही व्यवस्था है और इसके तहत उच्च न्यायालय में भी भारतीय भाषा का स्थान अंग्रेजी के समतुल्य नहीं हो पाता। फिर भी संविधान लागू होने के पैंसठ वर्ष पश्चात् भी केवल चार राज्यों के उच्च न्यायालयों में ही किसी भारतीय भाषा के प्रयोग को स्वीकृति मिली है। १४ फरवरी १९५० को राजस्थान के उच्च न्यायालय में हिंदी का प्रयोग प्राधिकृत किया गया। तत्पश्चात् १९७० में उत्तर प्रदेश, १९७१ में मध्य प्रदेश और १९७२ में बिहार के उच्च न्यायालयों में हिंदी का प्रयोग प्राधिकृत किया गया। अतः इन चार उच्च न्यायालयों को छोड़कर देश के सभी उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियों में अंग्रेजी अनिवार्य है। सन् २००२ में छत्तीसगढ़ सरकार (राज्यपाल) ने इस व्यवस्था के तहत उस राज्य के उच्च न्यायालय में हिंदी का प्रयोग प्राधिकृत करने की माँग केन्द्र सरकार (राष्ट्रपति) से की। सन् २०१० एवं २०१२ में तमिलनाडु एवं गुजरात सरकारों ने अपने उच्च न्यायालयों में तमिल एवं गुजराती का प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए केंद्र सरकार से माँग की। परन्तु इन तीनों मामलों में केन्द्र सरकार ने राज्य सरकारों की माँग ठुकरा दी। यह केन्द्र सरकार का न केवल अप्रजातांत्रिक एवं जनविरोधी रवैया है, वरन् यह भारतीय संविधान के संघीय ढाँचे पर भी प्रहार है। सन् २००२ के पूर्व किन-किन राज्य सरकारों ने इस तरह की माँग की, यह मुझे ज्ञात नहीं है।

सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी के प्रयोग की अनिवार्यता हटाने और एक या एकाधिक भारतीय भाषा को प्राधिकृत करने का अधिकार राष्ट्रपति या किसी अन्य अधिकारी के पास नहीं है।

अतः सर्वोच्च न्यायालय में एक या एकाधिक भारतीय भाषा का प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए संविधान संशोधन ही उचित रास्ता है। अतः संविधान के अनुच्छेद ३४८ के खंड (१) में संशोधन के द्वारा यह प्रावधान किया जाना चाहिए कि उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी तथा कम-से-कम किसी एक भारतीय भाषा में होंगी। इसके तहत मद्रास उच्च न्यायालय में अंग्रेजी के अलावा कम-से-कम तमिल, कर्नाटक उच्च न्यायालय में अंग्रेजी के अलावा कम-से-कम कन्नड़, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड और झारखंड के उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी के अलावा कम-से-कम हिंदी और इसी तरह अन्य प्रांतों के उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी के अलावा कम-से-कम उस प्रान्त की राजभाषा को प्राधिकृत किया जाना चाहिए और सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी के अलावा कम-से-कम हिंदी को प्राधिकृत किया जाना चाहिए। ध्यातव्य है कि भारतीय संसद में सांसदों को अंग्रेजी के अलावा संविधान की अष्टम अनुसूची में उल्लिखित सभी बाईस भारतीय भाषाओं में बोलने की अनुमति है। श्रोताओं को यह विकल्प है कि वे मूल भारतीय भाषा में व्याख्यान सुनें अथवा उसका हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद सुनें, जो तत्क्षण-अनुवाद द्वारा उपलब्ध

कराया जाता है। अनुवाद की इस व्यवस्था के तहत उत्तम अवस्था तो यह होगी कि सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में एकाधिक भारतीय भाषाओं के प्रयोग का अधिकार जनता को उपलब्ध हो परन्तु इन न्यायालयों में एक भी भारतीय भाषा के प्रयोग की स्वीकार्यता न होना हमारे शासक वर्ग द्वारा जनता को खुल्लमखुल्ला शोषित करते रहने की नीति का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

किसी भी नागरिक का यह अधिकार है कि अपने मुकदमे के बारे में वह न्यायालय में बोल सके, चाहे वह वकील रखे या न रखे। परन्तु अनुच्छेद ३४८ की इस व्यवस्था के तहत देश के चार उच्च न्यायालयों को छोड़कर शेष सत्रह उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय में यह अधिकार देश के उन सत्तानवे प्रतिशत (९७ प्रतिशत) जनता से प्रकारान्तर से छीन लिया है जो अंग्रेजी बोलने में सक्षम नहीं हैं। सत्तानवे प्रतिशत जनता में से कोई भी इन न्यायालयों में मुकदमा करना चाहे या उन पर किसी अन्य द्वारा मुकदमा दायर कर दिया जाए तो मजबूरन उन्हें अंग्रेजी जानने वाला वकील रखना ही पड़ेगा जबकि अपना मुकदमा बिना वकील के ही लड़ने का हर नागरिक का अधिकार है। अगर कोई वकील रखता है तो भी वादी या प्रतिवादी यह नहीं समझ पाता है कि उसका वकील मुकदमे के बारे में महत्वपूर्ण तथ्यों को सही ढंग से रख रहा है या नहीं। अगर चार उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषा में न्याय पाने का हक है तो देश के शेष सत्रह उच्च न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र में निवास करने वाली जनता को यह अधिकार क्यों नहीं? क्या यह उनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार नहीं है? क्या यह अनुच्छेद १४ द्वारा प्रदत्त 'विधि के समक्ष समता' और अनुच्छेद १५ द्वारा प्रदत्त 'जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध' के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं है? और इस आधार पर छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और गुजरात सरकार के आग्रहों को ठुकराकर क्या केन्द्र सरकार ने भारतीय संविधान की अवमानना का कार्य नहीं किया है? यह कहना कि केवल हिंदी भाषी राज्यों (बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान) के उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषा का प्रयोग अनुमत होगा, अहिंदीभाषी प्रांतों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार है परन्तु अगर यह तर्क भी है तो भी छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड एवं झारखंड के उच्च न्यायालयों में हिंदी का प्रयोग अनुमत क्यों नहीं है? निचली अदालतों एवं जिला अदालतों में भारतीय भाषा का प्रयोग अनुमत है। अतः उच्च न्यायालयों में जब कोई मुकदमा जिला अदालत के बाद अपील के रूप में आता है तो मुकदमे से संबद्ध निर्णय एवं अन्य दस्तावेजों के अंग्रेजी अनुवाद में समय और धन का अपव्यय होता है। वैसे ही बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान उच्च न्यायालयों के बाद जब कोई मुकदमा सर्वोच्च न्यायालय में आता है तो भी अनुवाद में समय और धन का अपव्यय होता है। प्रत्येक उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय में एक-एक भारतीय भाषा का प्रयोग भी अगर अनुमत हो जाए तो उच्च न्यायालय तक अनुवाद की समस्या पूरे देश में लगभग समाप्त हो जाएगी और सर्वोच्च न्यायालय में भी अहिंदी भाषी राज्यों के भारतीय भाषाओं के माध्यम से संबद्ध मुकदमों में से जो मुकदमे सर्वोच्च न्यायालय में आएँगे, केवल उन्हीं में अनुवाद की आवश्यकता होगी।

सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों में वकालत करने एवं न्यायाधीश बनने के अवसरों में भी तीन प्रतिशत अंग्रेजीदां अभिजात्य वर्ग का पूर्ण आरक्षण है, जो कि 'अवसर की समता' दिलाने के संविधान की प्रस्तावना एवं संविधान के अनुच्छेद १६ के तहत 'लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता' के मौलिक अधिकार का उल्लंघन है। इसके अलावा उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी की अनिवार्यता निम्नलिखित संवैधानिक व्यवस्थाओं का भी उल्लंघन है-

(१.) संविधान की प्रस्तावना के अनुसार भारत को 'समाजवादी लोकतंत्रात्मक गणराज्य' बनाना है और भारत के नागरिकों को 'न्याय' और 'प्रतिष्ठा और 'अवसर की समता' प्राप्त कराना है तथा 'व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता' को बढ़ाना है।

(२.) अनुच्छेद ३८ 'राज्य लोक कल्याण की अभिवृद्धि के लिए काम करेगा।' अनुच्छेद ३९ 'राज्य अपनी नीति का विशेष रूप से इस प्रकार संचालन करेगा कि सुनिश्चित रूप से सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो।' अनुच्छेद '३९ क' 'राज्य यह सुनिश्चित करेगा कि कानून का तंत्र इस प्रकार काम करे कि समान अवसर के आधार पर न्याय सुलभ हो और किसी भी असमर्थता के कारण कोई नागरिक न्याय प्राप्त करने के अवसर से वंचित न रह जाए।'

(३.) अनुच्छेद '५१ क' 'भारत के प्रत्येक नागरिक का यह मूल कर्तव्य है कि वह स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे और भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो।' ध्यातव्य है कि 'स्वराज' हमारे स्वतंत्रता आंदोलन का पथ-प्रदर्शक सिद्धांत था और हिंदी व अन्य जन-भाषाओं का प्रयोग तथा अंग्रेजी के प्रयोग का विरोध गांधीजी की नीति थी और राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार उनके रचनात्मक कार्यक्रम का मुख्य बिंदु था। स्पष्ट ही हमारे शासक वर्ग 'मूल कर्तव्य' का उल्लंघन कर रहे हैं।

(४.) अनुच्छेद ३४३ 'संघ की राजभाषा हिंदी होगी।' अनुच्छेद ३५१ 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे और उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

अनुच्छेद ३४८ में संशोधन करने की हमारी प्रार्थना एक ऐसा विषय है जिसमें संसाधनों की कमी का कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता है। यह शासक वर्ग द्वारा आम जनता को शोषित करते रहने की दुष्ट भावना का खुला प्रमाण है। यह हमारी आजादी को निष्प्रभावी बना रहा है। क्या स्वाधीनता का अर्थ केवल 'यूनियन जैक' के स्थान पर 'तिरंगा झंडा' फहरा लेना है? कहने के लिए भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है, परन्तु जहाँ जनता को अपनी भाषा में न्याय पाने का हक नहीं है, वहाँ प्रजातंत्र कैसा? दुनिया के तमाम उन्नत देश इस बात के प्रमाण हैं कि कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा में काम करके उन्नति नहीं कर सकता। किसी भी विदेशी भाषा के माध्यम से आम जनता की प्रतिभा की भागीदारी देश की विकास-प्रक्रिया में नहीं हो सकती। प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से विश्व के वही देश अग्रणी हैं जो अपनी जन-भाषा में काम करते हैं और प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से विश्व के वे देश सबसे पीछे हैं जो विदेशी भाषा में काम करते हैं। विदेशी भाषा में उन्हीं अविकसित देशों में काम होता है, जहाँ का बेईमान अभिजात्य वर्ग विदेशी भाषा को शोषण का हथियार बनाता है और इसके द्वारा विकास के अवसरों में अपना पूर्ण आरक्षण बनाए रखना चाहता है।

मार्च २०१२ से हम (न्याय एवं विकास अभियान) भारत सरकार एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से प्रार्थना करते रहे हैं कि अनुच्छेद ३४८ में संशोधन हो। ११ सितम्बर २०१२ को हमने श्रीमती सोनिया गांधी के निवास के बाहर सत्याग्रह करने का इरादा जताया तो हमें एक सप्ताह का समय और देने को कहा गया। १६ सितम्बर को हमने श्रीमती सोनिया गाँधी के निवास के बाहर सत्याग्रह करना चाहा परंतु पुलिस ने हमें थाने में ही गिरफ्तार रखा। बाद में हम शाम को ८ बजे इस शर्त पर धरना पर नहीं जाने के लिए राजी हुए कि ६ दिनों के भीतर हमारी माँग पर विचार किया जाएगा। इस आश्वासन के अनुरूप २१ सितंबर को हमें बताया गया कि १६ सितम्बर के हमारे पत्र को सोनियाजी ने श्री आस्कर फर्नांडिस, महासचिव, कांग्रेस पार्टी के पास विचारार्थ भेजा है। आस्करजी ने २३ सितम्बर २०१२ से लेकर ३० अक्टूबर २०१२ के बीच हमें पाँच बार मिलने के लिए कांग्रेस मुख्यालय में बुलाया। उन्होंने तत्कालीन कानून मंत्री श्री सलमान खुर्शीद को पत्र लिखा। हम उस पत्र की भाषा से संतुष्ट थे। श्री फर्नांडिस ने इस विषय पर अपनी रिपोर्ट श्रीमती सोनिया गांधी को २६ अक्तूबर २०१२ को सौंपी। हम उस रिपोर्ट से संतुष्ट थे और श्री फर्नांडिस ने आशा व्यक्त की कि संसद के शीत-सत्र में इस विषय पर संविधान संशोधन विधेयक पेश किया जाना चाहिए। परंतु इस विषय पर कोई घोषणा न पाकर हमने श्रीमती गांधी को १४ नवंबर २०१२ एवं २८ नवंबर २०१२ को पत्र लिखा और ४ दिसंबर २०१२ से उनके निवास एवं उनके कार्यालय के बाहर अकबर रोड पर लगातार सत्याग्रह पर बैठे हैं। परंतु ज्यादातर समय पुलिस हमें मनमाने ढंग से तुगलक रोड थाना में गिरफ्तार रखती है। ४ दिसंबर से लेकर अब तक मैं कभी भी किसी व्यक्तिगत कार्य से अन्यत्र घर, पोस्ट ऑफिस, बैंक, बाजार इत्यादि नहीं गया।

इस विषय में संविधान संशोधन विधेयक संसद में प्रस्तुत करने हेतु देश के सजग नागरिक सरकार पर दबाव डालें, यही मेरा आग्रह है।

संयोजक, न्याय एवं विकास अभियान

(मुझसे संपर्क करने हेतु ०९८१८२१६३८४ पर कोई भी फोन कर सकते हैं।)

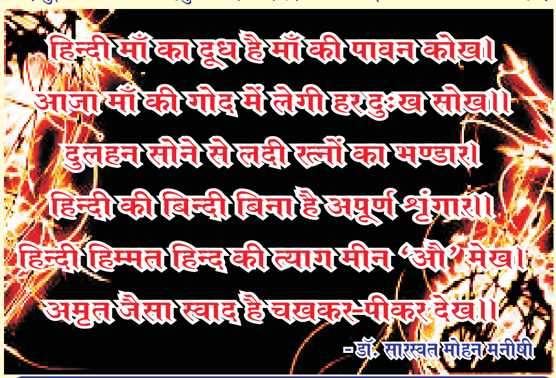

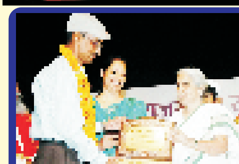

प्रसिद्ध साहित्यकार व पत्रकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू को सम्मानित किया गया। सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

समाचार

अन्धश्रद्धा उन्मूलन समिति के संस्थापक की कायरतापूर्ण हत्या

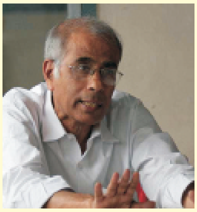

अंधविश्वास के खिलाफ जोरदार अभियान चलाने वाले डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की पुणे में अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी। पूणे में जब वे सुबह की सैर पर निकले थे तब घात लगाकर बैठे हत्यारों ने उन्हें शिकार बना डाला। डॉ. दाभोलकर की हत्या के खिलाफ महाराष्ट्र के तमाम बुद्धिजीवी सड़क पर उतर पड़े हैं। वे करीब दो दशक से अंधविश्वासों और स्वयंभू बाबाओं के खिलाफ मोर्चा खोले हुए थे। मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने हत्याकाण्ड की कड़ी निंदा करते हुए हत्यारों का सुराग देने पर १० लाख रुपये इनाम देने का ऐलान किया है। मशहूर पत्रिका 'साधना' के संपादक डॉ. दाभोलकर अंधविश्वासों और स्वयंभू बाबाओं के खिलाफ अभियान चलाने के लिए देश भर में चर्चित थे। पुलिस की मानें तो उनकी हत्या पूर्वनियोजित तरीके से की गई। वे आजकल अमानवीय रीतियों एवं अंधविश्वासों के खात्मे के लिए प्रस्तावित अंधविश्वास और काला जादूरोधी विधेयक पारित कराने के लिए महाराष्ट्र सरकार पर दबाव डालने का अभियान चला रहे थे। कहा जा रहा है कि इससे वरकारी पंथ से जुड़ा एक वर्ग डॉ. दाभोलकर के खिलाफ हो गया था।

अथर्ववेद पारायण यज्ञ

१२ सितम्बर से २२ सितम्बर २०१३

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक १२ सितम्बर १३ से २२ सितम्बर १३ तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् **डॉ. सोमदेव शास्त्री** के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। वैदिक संस्कृति के उपासक यज्ञ प्रेमी सभी भाई बहिनों से इस पवित्र कार्यक्रम में सहभागी होने का अनुरोध है।

कार्यक्रम

यज्ञ व प्रवचन	–	प्रातः ७ से ९ तथा
(प्रतिदिन)	–	सायं ५.३० से ८
पूर्णाहुति	–	दिनांक २२ सितम्बर १३ प्रातः ७ बजे से।

निवेदक

प्रधान- भँवरलाल आर्य
मो.- ०९४१३७६३५९४

मंत्री- ललिता मेहरा
मो.- ०९३५२५०१६८२

Arya Samaj Chicagoland Celebrates Vishwa Chetna Mahayajna

- By Subhash Bhatia

It was a memorable day in the history of Arya samaj chicagoland when it celebrated its annual function christened as "Vishwa chetna Mahayajna" on July 27 and 28th , Saturday and Sunday this year. The

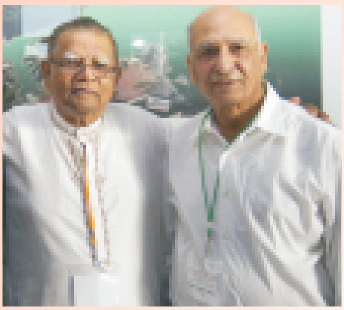

enthusiasm it saw among the participants was refreshing and reconfirmed that we the people of Indian origin, who have chosen to live in this great country, shall continue to spread knowledge as enshrined in Vedas and strive to the principle "Krinvanto Vishwarayam" that is make world noble in its deeds. We shall take the world along and pray for "SarveyBhavantu Sukhina" seeking the blessings of almighty for the good of every living being. The day on 27th July, Saturday, started with Flag Hoisting, when flags of Arya Samaj (AUM Dhwaja), The Tricolor of India and The flags of the United States of America, the country which many Indians have made their homes were unfurled by Pandit Sh. Ram Lal ji , Patron of Arya Pratinidhi Sabha America, a leading, Guide and Philospher of Arya Samaj. The flag hoisting ceremony was followed by a grand Yajna comprising of three Yajna shalas specially made for the occasion. The Yajna was conducted and coordinated by Pandit Sh. Ram Lalji, Acharya Sh. Ram Krishan Ji Shastri who flew from Lucknow, India; and Acharya Sh. Om Prakash ji Samvedi, who came from Rotterdam (Holland).

The occasion was also a special one for Arya Samaj Chicagoland as it coincided with the **79th Birthday of dedicated President Dr. Sukhdev Soni, the founder of Arya Samaj Chicagoland.**

The discourse of Sh. Ramkishan ji Shastri did in fact was instrumental in creating awareness (Chetna) by making all aware of their capabilities and need to follow what Vedas have said "Tamso ma Jyotirgamay" , The program was further made everlasting in the memories of the participating public, by the Music and Bhajans rendered by none other than Smt. MinooPurusahottam ji a legendary singer from India, who has made Chicagoland her home. The appeal made by Ms. Sangeeta Hans the Secretary of Arya Samaj to contribute generously to the noble institution like Arya Samaj by becoming members drew tremendous response and people were seen eager to write cheques. Both days concluded with the sumptuous mouth watering lunches sponsored by Sh. Anil Oroskar of Orochem Industries and Sh. Kirit Shah who have always been generous contributors to the cause of Arya Samaj.

हलचल

न्याय हो तो ऐसा

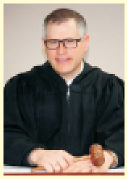

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में लिखा है कि राजा यदि स्वयं अपराध करे तो वह भी सजा का भागी हो। अपने देश में तो यह उच्च गुण कहीं दिखायी नहीं देता परन्तु अमेरिका के एक न्यायाधीश श्री रेमण्ड वोइट ने यह कर दिखाया। कानून यह था कि न्यायालय में फोन चालू रख अगर कोई उसकी आवाज से शान्ति भंग करेगा तो वह दण्ड का भागी होगा। एक दिन बहस सुनते स्वयं न्यायाधीश महोदय का नया स्मार्ट फोन बज गया। न्यायाधीश का यह कथन था कि कानून सबके लिए एक है। और श्री रेमण्ड ने स्वयं को कानून के उल्लंघन व कोर्ट की अवमानना का दोषी करार देते हुए स्वयं के ऊपर २५ यू.एस. डालर का जुर्माना कर दिया।

पूरी की पूरी सड़क ही चुराली

मानें न माने पर यह सत्य है कि रूस के एक छोटे शहर, पारचेग (Parcheg) से बाईचेगड़ा नदी (Vychegda River) को जाने वाली पूरी सड़क ही चुरा ली। पुलिस ने इस व्यक्ति के कब्जे से ८२ कंक्रीट के स्लेब बरामद किए। चुराई गई सड़क का मूल्य ४००० पौण्ड ऑका गया है। ४० वर्षीय चोर ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया तथा उसे इस चोरी के लिए २ वर्ष की सजा दी गयी।

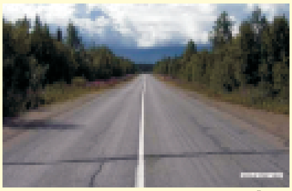

प्रतिस्वर

सत्यार्थ सौरभ का अगस्त माह का अंक प्राप्त हुआ। इसकी सजधज ही अलग है। आपका सम्पादकीय पढ़कर ऐसा लगा कि जैसे मेरे मन के विचारों को ही आपने लेखनी द्वारा चित्रित कर दिया है। बहुत संक्षिप्त परन्तु सटीक आलेख मुझे यह प्रतीत हुआ। पत्रिका की अन्य सामग्री भी उच्च स्तरीय है। आपको बहुत बहुत बधाई।

–महाराज सिंह, मंत्री आर्य समाज, बांदीकुई

आदरणीय! सत्यार्थ सौरभ निरन्तर मेरे पास आ रहा है। पत्र प्रेषण जारी रखें। यद्यपि आर्य जगत् के अन्य मासिक पत्र भी मँगवा रहा हूँ। परन्तु यह पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। अतः प्रेरणा मिली। आपके पूज्य पिताजी आदरणीय स्वर्गीय श्री भाई प्रेम जी मेरे अनन्य मित्र रहे हैं। अनेक स्थलों पर उनके दर्शन होते रहे। न्यास के माध्यम से आपकी सेवाएँ प्रशंसनीय हैं।

–सरस्वती प्रसाद गोयल, सवाईमाधोपुर

ज्ञानवर्द्धक मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का जुलाई अंक मिला। 'चाहिए दण्डी स्वामी विरजानन्द', 'सत्य का महत्व' श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक का 'तीर्थ' व वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार का 'धर्म एक वैज्ञानिक विश्लेषण' अत्यन्त प्रेरक हैं। डॉ. जीतेन्द्र कुमार का लेख 'सत्य और अहिंसा में प्रमुख कौन' काफी अच्छा लगा। पत्रिका के इस लाजवाब अंक के लिए साधुवाद।

–प्रो.श्यामलाल कौशल

शोक संदेश

आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि जी का ७ अगस्त २०१३ को ८५ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। इस क्षति की पूर्ति कभी नहीं हो सकती। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें और हमें वह शक्ति भक्ति प्रदान करें जिससे आचार्य जी के बताये पथ पर हम चल सकें

– सत्यार्थ सौरभ परिवार

Arya Mahasammelan, Markham (Toronto-Canada)- A great sucess

The Sammelan opened with flag hoisting ceremony at the front entrance of the Vedic Cultural Centre. Aum Dhwaj and the Canadian Flag were hoisted by the chief guest, Ontario Senator Reza Moridi. Prayers along with Bhajan, "Yeh Om Ka Jhanda.." commemorated the opening ceremony.

The theme for this year's Sammelan was "The Role of Arya Samaj in the modern world". In the opening Session President of Arya Pratinidhi Sabha America, Dr. Ramesh Gupta welcomed all delegates and guests. The prominent Keynote speech was delivered by well known Vedic scholar Acharya Gyaneshwar ji of Vanprasth Sadhak Ashram Rojad Gujarat.

Mr. Havishkrit Arya (10) year old spoke very well on First Duty of Arya-Become Arya Himself. He spoke in fluent Hindi and got of loud applause and standing ovation.

The other keynote speakers of the sammelan were Dr. Virendra Alankar (Dayanand Chair for Vedic Studies - Punjab University), Dr. Sudhir Anand (California), Mr. Amar Erry, Acharya Chandrashekhar Shastri from India, Mr. Vishrut Arya, Mr. Bhuvnesh Khosla, Mr. Vimal Velani, Ms. Davi Lakhnath, Ms. Sati Gurdial, Mr. Veer Mukhi, Patron of Arya Pratinidhi Sabha Pandit Ram Lall ji, Dr. Jyoti Gandhi, Rishi & Rohan Bagga from Atlanta, Dr. Devbala Ramanathan, Dr. Balvir Acharya (Former Head of Department Sanskrit Maharshi Dayanand University Rohtak),Dr. Ramesh Gupta, Mrs. Saroj Mukhi (NY), Dr. Deen Bandhu Chandora (Atlanta), Mr. Ashwini Rajpal (London), Dr. Suryanarayan Nanda (Houston) , Vidyarthi Sriram , Swami Sampoornanand ji. In the Gala dinner, Dr. Asha Seth Senator and John McCullough Member of Parliament welcomed American delegates and congratulated Mr. Anand Rupnarine Chairman VCC and Mr. Sudershan Berry President Arya Samaj Markham.

Ontario Government also presented proclamation to Dr. Ramesh Gupta President, Arya Pratinidhi Sabha America.
Mr. Mul Raj Sethi welcomed and thanked for helping out arrangements.
It was also declared that the 24th Arya Maha Sammelan will be held in New Jersey from July 31 to August 3, 2014.

\- Aryapathik Girish Khosala

ज्योतिष्शास्त्र का मूल वेद

प्रो.ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आकाश में चमकने वाले सूर्य चन्द्रमादि ग्रह-नक्षत्रादि को ज्योतिष्पुञ्ज कहते हैं। इनका ज्ञान जिससे हो उसे ज्योतिष्शास्त्र कहते हैं। विश्व में इस विद्या के प्रवर्तक भगवान् वेद हैं। ज्योतिष्शास्त्र से हम काल की गणना करते हैं, किन्तु काल अनन्त है उसकी गणना असंभव है। लेकिन सूर्यादि ग्रहों के माध्यम से हम मध्य से ही गणना करते हैं। ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (१।१६४) का ग्यारहवाँ मंत्र है-

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः॥

(ऋग्वेद १।१६४।११) इस मंत्र में सूर्य का चक्र उसके १२ अरे, ७२० पुत्र बताये गये हैं। यह चक्र निरन्तर घूमता रहता है न कभी जीर्ण (बूढ़ा) होता है न कभी मरता है। ३६० दिन और ३६० रात्रियाँ ये ही ७२० होकर सूर्य के पुत्र हैं। १२ अरे बारह मास हैं।

'वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते ॥

(ऋ.१।२५।८) इस ऋङ् मंत्र में वर्ष के बारह (१२) मासों तथा १३ वाँ अधिमास या मलमास का वर्णन है। यजुर्वेद में १३ वें

मास को 'अंहसस्पति'(२२।३१) कहा गया है। इसी कारण आज भी लोग इसे मलमास कहते हैं। अरब के लोग अधिमास के लिए 'वज्रमास' शब्द का प्रयोग करते हैं। चान्द्रमास और सौरमास के आधार पर चान्द्रवर्ष और सौरवर्ष के अन्तर को पाटने के लिए अधिमास का प्रयोग किया जाता है। जिससे वर्ष में ऋतुओं का हिसाब ठीक रखा जा सके। अन्यथा आषाढ़ में जाड़ा तथा माघ में वृष्टि का अनुभव होता। ऋग्वेद के 'द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत। तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः' (ऋग् १/१६४/४८) मन्त्र में प्रधियाँ, ३ नाभियाँ और ३६० शंकु का उल्लेख है। १२ प्रधियाँ १२ बारह मास हैं। ३ नाभियाँ मुख्य तीन ऋतुएँ - ग्रीष्म, वर्षा और शरद हैं। ३६० शंकु वर्ष के ३६० दिन हैं। ज्ञातव्य है कि वर्ष के ३६० दिन चान्द्रमास के आधार पर हैं। चन्द्रमा के आधार पर मास का निर्धारण आज भी पंचांगों में किया जाता है। क्योंकि तिथियों का निर्धारण चन्द्रमा के कृष्ण पक्ष और

शुक्लपक्ष की प्रतिपद या प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, कृष्णपक्ष (बहल दिवस के संक्षेपण बदि) की अमावस्या और शुक्ल पक्ष (शुक्ल दिवस के संक्षेपण शुदि) की पूर्णिमा के आधार पर ही तय होती है। तिथियों का नामकरण का यह आधार वैज्ञानिक है। जनवरी, फरवरी आदि महीनों के तारीख का निर्धारण का वैज्ञानिक आधार नहीं है। जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर में ३१ दिन और अप्रैल, जून, सितम्बर तथा नवम्बर में ३० दिन तथा फरवरी २८ दिन तथा चार वर्षों बाद २९ दिन के फरवरी महीने का निर्धारण कल्पित है। पूर्व में चन्द्रमा के आधार पर मास या महीना का प्रचलन रहा है। इस्लाम मतानुयायी आज भी चन्द्रमा को देखकर ईद आदि त्यौहार मनाते हैं। अंग्रेजी में मास के लिए Month नाम का आधार moon चन्द्रमा है। ३६० शंकु जहाँ वर्ष के ३६० दिन हैं वहाँ इस मंत्र में वर्ष के लिए चक्र शब्द का प्रयोग यह भी बताता है कि वृत्त चक्राकार होता है और एक वृत्त में ३६० शंकु ३६० अंश (Degrees) हैं। इस मंत्र में १२ प्रधियों से १२ राशियों का अर्थ भी लिया गया है। १२ राशियाँ (Signs of Zodiac) ये हैं- १.मेष २.वृष ३.मिथुन ४.कर्क ५.सिंह ६.कन्या ७.तुला ८.वृश्चिक ९.धनु १०.मकर ११.कुम्भ १२.मीन। यूनानी ज्योतिषी 'एराइज' मेष तौरुस, वृषभ, जेमिनी, मिथुन आदि

इस प्रकार के नाम रखे हैं। जापानी ज्योतिषियों ने १२ राशियों को चूहा, साँप, मुर्गा आदि नाम रखकर इन्हें मनुष्येतर माना है। वस्तुतः ये राशियाँ ताराओं के समूह हैं, जिनको जैसी आकृति मालूम हुई उन्होंने वही नाम रख दिया।

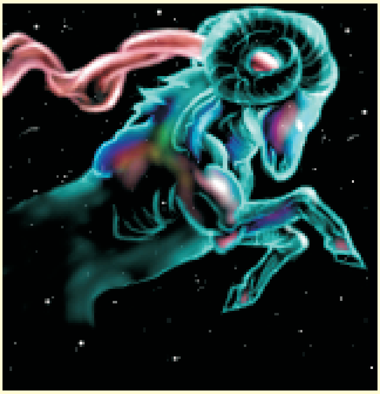

वर्ष के १२ बारह मास की जानकारी वेदों के आधार पर वैदिक ऋषियों को प्रारम्भ से ही थी। यूरोपीय ज्योतिष् शास्त्र के सम्बन्ध में पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने लिखा है-

'ध्यान देने की बात है कि प्राचीन रोमवासी आरम्भ में १० महीने और ३०४ दिन का वर्ष मानते थे। १२ महीने का संवत् वहाँ पहले पहल 'राजानुमा पोपिल्स' ने (६७५ ई. पूर्व) आदि में जनवरी, फरवरी, मास जोड़कर चलाया था। लेकिन दिन तब भी ३५५ ही माने जाते थे। ५ वीं शती ईसा के पूर्व वहाँ चान्द्र की जगह सौर वर्ष माना जाने लगा जो ३५५ दिन का ही होता था। इस सौर वर्ष और वास्तविक सौर वर्ष के अंतर मिटाने के लिए वहाँ अनेक प्रयत्न किए गए। यूनानियों से 'अधिक दिन' मानने की रीति ली गई। अन्त में ४६ ई. पूर्व में जूलियस सीजर ने वर्ष का दिनमान ३६५ निश्चित किया। जूलियस और अगस्टस के नाम पर जुलाई और अगस्त नाम रखे गये। (प्राचीन लिपिमाला पृ. १९४)। जनवरी, फरवरी पागान के देवताओं के नाम पर रखे गये। जनवरी द्विमुख जानुष के नाम पर है, उसका एक मुँह दिसम्बर की ओर बन्द और दूसरा फरवरी की ओर खुला हुआ है। जनवरी फरवरी नामक दो मास प्रारम्भ में जोड़े गए, इसके पूर्व मार्च महीना वर्ष का आरम्भिक मास था। March past प्रारम्भन का सूचक है। इसीलिए सितम्बर,अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर ये क्रमशः सातवें, आठवें, नवें और दसवें महीने थे। लेकिन अब ये व्यवहार में क्रमशः नवें, दसवें, ग्याहरवें और बारहवें महीने माने जाते हैं। अभी तक व्यवहारानुकूल नामकरण में सुधार नहीं हुआ। किन्तु वैदिक ज्योतिष्शास्त्र की पद्धति प्रारम्भ से ही पूर्ण वैज्ञानिक है।

एसोसियेट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
रणवीर रणंजय महाविद्यालय, अमेठी(उत्तरप्रदेश)

महर्षि की बगिया

महके-चमके-दमके नित्य

मरु-मरु को वे गुलजार बना देते थे,
पाखण्ड निराधार बना देते थे।
सान्निध्य में आता जो दयानन्द जी के,
सपने सभी साकार बना देते थे।।
वेदों का सही अर्थ बताया सबको,
सद्ज्ञान का सन्मार्ग सुझाया सबको।
'सत्यार्थ प्रकाश' से किया जगमग देश,
मानवता का शुचि पाठ पढ़ाया सबको।।
पुष्पों के सदृश महके दयानन्द जी नित्य,
दिनकर के सदृश चमके दयानन्द जी नित्य।
दर्पण के सदृश सत्य दिखाया सबको,
कुन्दन के सदृश दमके दयानन्द जी नित्य।।
जो आर्य-जगत् के बने दिनमान ललाम,
जो वाङ्मयी के थे सुअन अति अभिराम।
जगती में अमर हो गया जिनका शुभनाम,
उन स्वामी दयानन्द को शत-शत बार प्रणाम।।

– डॉ. मिर्जा हसन नासिर, लखनऊ

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास और आर्य समाज जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २७, २८, २९, ३० सितम्बर २०१३, शुक्रवार, शनिवार, रविवार और सोमवार को प्रान्तीय स्तर पर एक आर्य सम्मेलन किया जा रहा है। सम्मेलन में आर्य समाज की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए व्याप्त समस्याओं के सटीक समाधान प्रस्तुत किए जाएँगे। समस्त ऋषि भक्त, सिद्धान्तनिष्ठ आर्यों से प्रार्थना है कि आप सम्मेलन में पधार कर आर्य समाज को जीवन देने वाले अभियान में सहयोगी बनें।

– विजय सिंह भाटी, अध्यक्ष

रोम-रोम पर शोथ है,
कदम-कदम पर लोथ।
झूठ ठोस लगने लगा,
दिखे सत्य में शोध।।
आँखें वाले बन गए,
जाने क्यों धृतराष्ट्र।
राष्ट्र बीच षड्यन्त्ररत,
क्यों हैं अगणित राष्ट्र।।

–डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी

दयानन्दीय शिक्षा-पद्धति

पाठ्य साम्रगी का परीक्षण- महर्षि की शिक्षा नीति का यह एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस विषय में उन्होंने जो लिखा है उसका यहाँ सारांश प्रस्तुत किया जाता है। विद्यालय आदि में जो पढ़ना पढ़ाना हो उसकी विषय वस्तु का अच्छी तरह परीक्षा से परीक्षण अर्थात् कसौटियों पर कस कर देख लेना चाहिए जिससे कोई असत्य अप्रमाणिक, अभद्र एवं अनुपयुक्त विषयवस्तु पाठ्यक्रम में न आ जाए जैसे मध्यकाल में आ जाती थी जिससे बालक कुसंस्कारी बनकर अंधविश्वासों का शिकार होते रहे।

महर्षि दयानन्द ने पाँच प्रकार की परीक्षाओं का परिगणन किया है-

१.ईश्वर के गुणों, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूलता।

२.सृष्टिक्रम से अनुकूलता।

३.आप्त अर्थात् धार्मिक, सत्यवादी और निष्कपटी विद्वानों के उपदेश से अनुकूलता।

४.अपनी आत्मा से अनुकूलता।

५.प्रत्यक्षादि अष्ट प्रमाणों से सिद्धता। (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें-सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

ये पाँच प्रकार की परीक्षा है जिसकी कसौटी पर कस कर

देखना चाहिए कि जो जो आज पढ़ा-पढ़ाया जा रहा है वह गलत न हो। जैसे आर्य लोग बाहर से आये और यह देश भारतवर्ष है तो इण्डिया भी है। कहीं किसी देश के नाम का भी अनुवाद होता है? ऋषि का यह आग्रह समुचित है। यहाँ हमें एक दृष्टि डाल सत्यार्थ प्रकाश में निरूपित दयानन्द शिक्षा नीति के निर्देशक तत्त्वों को समझ लेना आवश्यक है।

१ निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा- महर्षि दयानन्द के अनुसार राष्ट्र के प्रत्येक बालक और बालिका की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए। प्रत्येक बालक बालिका को ५ वर्ष की आयु, और देरी हो जाए तो अधिक से अधिक ८ वर्ष की आयु होते ही शिक्षा प्राप्ति के लिए विद्यालय में प्रवेश करा देना चाहिए। जिन बालक बालिकाओं के माता पिता ऐसा न करें उनको दण्डित करने के लिए कानून का प्रावधान और समाज से बहिष्कृत करने का नियम होना चाहिए। ताकि कानून का पालन न करने वाले भयभीत रहें। क्योंकि सामाजिक बहिष्कार का डर कानून से कई गुना अधिक होता है। यह है कि अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान तो सभी शिक्षा शास्त्री चाहते हैं पर दयानन्द जिस क्रान्तिकारी ढंग से उसे लागू कराकर राष्ट्र के प्रत्येक बालक बालिका के लिए शिक्षा अनिवार्य करना चाहते हैं कि कोई बालक अनपढ़ न रहे, वह अद्भुत है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४५ में प्रत्येक १४ वर्ष तक के बालक बालिका के लिए शिक्षा अनिवार्य है। पर बच्चों के माता पिता अपने बच्चों को विद्यालय भेजें या चाहे न भेजें तो उनके लिए दण्ड की व्यवस्था नहीं है। जबकि महर्षि दयानन्द न भेजने पर दण्डनीय मानते हैं।

चूँकि महर्षि दयानन्द प्रत्येक बालक को विद्यालय भेजना अनिवार्य और न भेजने पर दण्डनीय मानते हैं तब दण्ड के भय से अमीर लोग तो अपने बच्चों को विद्यालय भेज देंगे परन्तु साधनहीन गरीब लोग कहाँ से भेज पायेंगे। भले ही वे दण्ड क्यों न भोग लें। अतः स्पष्ट है स्वामी दयानन्द प्रतिपादित शिक्षा जहाँ अनिवार्य होगी वहाँ प्रारम्भ से आखिर तक निःशुल्क भी अपने आप होगी ही। इसीलिए महर्षि जी ने शिक्षा व्यवस्था पर होने वाले व्यय की जिम्मेदारी राज्य पर डाली है।

२ सह-शिक्षा निषेध- एक सफल शिक्षा शास्त्री के लिए मनोविज्ञान का ज्ञाता होना भी आवश्यक होता है। स्वामी

जी बालक बालिकाओं के मनोवैज्ञानिक विकास के तो ज्ञाता थे ही, शरीर के विकास के साथ साथ उनके स्वभाव, मनोवृत्तियों, रुचियों आदि में होने वाले परिवर्त्तनों के भी जानकार थे। शारीरिक विकास के साथ साथ नर नारी में एक दूसरे के प्रति सहज आकर्षण होता है, किन्तु जब तक दाम्पत्य जीवन जीने की स्थिति नहीं आ जाती तब तक बालक बालिकाओं का एक दूसरे के सम्पर्क में आना शरीर तथा चरित्र दोनों का ही विनाशक बन जाता है। इस तथ्य से सुपरिचित स्वामी दयानन्द बालक बालिकाओं की सह शिक्षा के प्रबल विरोधी हैं। वे लिखते हैं "जब आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हो उनसे शिक्षा न दिलावें।" (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

लड़के लड़कियों की पाठशालाएँ पर्याप्त दूरी पर रहें, ताकि वे एक दूसरे के सम्पर्क में न आयें। इसके लिए महाराज लिखते हैं कि- "विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और लड़के लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। जो वहाँ अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की लड़की भी न जाने पावें। अर्थात् जब तक ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें तब तक अष्टविध सम्पर्क से पृथक् रहें। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)।

जिन देशों में सह शिक्षा का प्रचलन रहा है (दुर्भाग्य से भारत भी इसका अपवाद नहीं है) वहाँ बालक बालिकाओं में अनाचार, व्यभिचार तथा विषयासक्ति के दुर्गुण सहजतया पनपते हैं। लाला लाजपत राय ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दुःखी भारत' में अमेरिकन न्यायाधीश लिण्डसे को उद्धृत कर सिद्ध किया है कि 'सहशिक्षा के प्रचलन के कारण उस देश के हाई स्कूलों के विद्यार्थी उन सब बातों से परिचित हो जाते हैं जिनका ज्ञान परिपक्व आयु प्राप्त दम्पत्तियों को ही होना चाहिए।'

३ विद्यार्थियों से समान व्यवहार- स्वामी दयानन्द शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार का भेदभाव बरतने के समर्थक नहीं हैं। विद्यालयों और गुरुकुलों में अध्ययन करने वाले छात्र चाहे धनी की सन्तान हों या गरीब की उनकी जाति, वर्ण या वर्ग कोई भी क्यों न हो, शिक्षा स्थान में वे सब समान हैं। ऋषि ने इस प्रसंग में लिखा है "सबको तुल्यवस्त्र, खान पान, आसन दिये जावें, चाहें वह राजकुमार हो या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सबको तपस्वी

होना चाहिए" (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)।

शिक्षा में यह समता का भाव दयानन्द की शिक्षा पद्धति की रीढ़ के तुल्य है। जिस प्रकार उज्जैन के महर्षि सांदीपनि के आश्रम में रहकर यादव कुल के राजपुत्र कृष्ण तथा दरिद्र ब्राह्मण सुदामा ने परस्पर भ्रातृप्रेम तथा सखाभाव का परिचय दिया, वैसा उदाहरण तभी सम्भव है जब माता पिता की धनाढ्यता अथवा अंकिचनता को दृष्टि से ओझल कर सभी विद्यार्थियों के प्रति समान व्यवहार किया जावे। इसलिए यह भी आवश्यक है कि बालक बालिकाएँ, गुरुकुल या विद्यालय आश्रम में निवास करते समय अपने माता पिता से, न माता पिता छात्र-छात्राओं से मिल सकें। महर्षि की शिक्षा व्यवस्था में यह तत्त्व बहुत क्रान्तिकारी है। यदि किसी शूद्र ब्राह्मणादि या गरीब या अमीर का बालक अपने घर जाएगा या उनके माता पिता विद्यालय में उनसे मिलेंगे तो उन्हें अपने अपने परिवारों की निम्न या उच्च स्तरों की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का बोध हो जाएगा। फलस्वरूप छात्र-छात्राओं में आपसी ऊँच नीच, गरीबी-अमीरी की भावना, विद्यालय में सब छात्र-छात्राओं को समान निवास, भोजन, वस्त्र और शिक्षा देने के बाद भी पनप जाएगी, जो उनकी आन्तरिक शक्ति को विकसित होने में बाधा पहुँचाएगी। इसलिए विद्यार्थियों को अपने परिवारों की नीची ऊँची, छोटे-बड़े की स्थिति का तब तक पता नहीं चलना चाहिए जब तक उनकी शिक्षा पूरी न हो जाए और उनकी सही सही सोचने समझने की मानवीय शक्ति (बौद्धिक क्षमता) पूरी तरह विकसित न हो जाए। विद्यालय में छात्र-छात्राओं का मापदण्ड केवल उनकी बौद्धिक क्षमता और योग्यता का ही होना चाहिए। किसने किस परिवार में जन्म लिया उससे नहीं। निष्कर्ष यह है कि यह व्यवस्था भी सच्चे अर्थों में सबको समान अवसर और सामाजिक-प्राकृतिक न्याय के आदर्शों को क्रियान्वित कराने में सहयोगी बनेगी। (आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग ४४३-४४६)

४ भाषा का प्रश्न- स्वामीजी ने शिक्षा के माध्यम रूप में

राष्ट्रभाषा को स्वीकार करने पर बल दिया। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनेक भाषाओं के व्यवहार में आने पर भी वे हिन्दी को समग्र भारत राष्ट्र की प्रतिनिधि भाषा मानते थे। स्वयं की मातृभाषा गुजराती होने पर भी उनकी मान्यता थी कि आर्य भाषा (हिन्दी) के द्वारा ही हम अपने विचारों और मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचा सकते हैं। जब तत्कालीन शासन ने शिक्षा का माध्यम क्या हो इस पर देशवासियों के विचार जानने के लिए मि. हन्टर की अध्यक्षता में एक आयोग की स्थापना की, उसे सभी प्रान्तों का दायित्व सौपा तो स्वामीजी ने भी आर्य समाज के अधिकारियों को एक परिपत्र भेज कर यह निर्देश दिया कि वे हन्टर कमीशन के समक्ष उपस्थित होकर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने तथा अदालतों में इसके प्रयोग की स्वीकृति प्रदान करें। स्वामी के एतद् विषयक उद्योग का ही परिणाम था कि आगे चलकर जब भारत में गुरुकुल शिक्षा पद्धति तथा अन्य राष्ट्रीय विद्यालयों का प्रचलन हुआ तो उनमें शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी को मान्यता दी गई।

हिन्दी की ही भाँति संस्कृत शिक्षण को भी ऋषि दयानन्द सर्वथा आवश्यक समझते थे। उनके अनुसार संस्कृत भाषा में जो वैदिक और लौकिक साहित्य विद्यमान है वह मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति के सूत्रों की ही विवेचना करता है। उन्होंने विक्रम और भोज जैसे राजर्षियों का उदाहरण देकर बताया कि उस युग में संस्कृत सर्वसामान्य की भाषा थी (द्रष्टव्य-बल्लाल सेन कृत भोज प्रबन्ध)। उनकी यह दृढ़ धारणा थी कि यदि संस्कृत व्याकरण का आर्ष प्रणाली से अध्ययन किया जाये तो तीन वर्ष में पूर्ण वैयाकरण होकर वैदिक और लौकिक शब्दों का बोध हो सकता है।

(सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

५ धर्मशिक्षा अनिवार्य- महर्षि प्रतिपादित शिक्षा के पाठ्यक्रम में अन्य विषयों की तरह धर्म शिक्षा का भी प्रमुख स्थान है। *"जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढनी चाहिए। वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य सीखनी चाहिए।"* (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)। इस उद्धरण में अनिवार्य पठन-पाठन विषयों के जो नाम आये हैं उनमें धर्म भी एक पठन विषय है। धर्म का आशय यहाँ पर किसी मत, मजहब और सम्प्रदाय आदि से न होकर मानव धर्म अर्थात् सत्य सनातन वैदिक धर्म से है जिसका नास्तिक सहित कोई भी विरोधी नहीं हो सकता।

यह धर्म शिक्षा ही मानवीय मूल्यों को विद्यार्थियों में आरोपित करती है। पर खेद है कि वर्तमान में धर्म के सही स्वरूप को न समझ, धर्म शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा। यही कारण है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त कमीशन के अध्यक्ष डा. दौलतसिंह कोठारी को कहना पडा- "विद्यालय पाठ्यक्रम का गम्भीर दोष है सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा का अभाव।"

६ शिक्षा-प्रसार का प्रबन्ध करना राज्य का प्रमुख कर्त्तव्य- महर्षि ने, शिक्षा प्रदान करने का प्रबन्ध राज्य का कर्त्तव्य है, पर उस समय विचार किया था, जब इंग्लैण्ड और यूरोप में भी सम्पूर्ण जनता को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व राज्य अथवा समाज का है, यह सिद्धान्त स्वीकार नहीं किया गया था। इस विषय में स्वामी दयानन्द ने लिखा है *"राजा को योग्य है सब कन्या और लडकों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रख के विद्वान् कराना, जो कोई इस आज्ञा को न मानें तो उसके माता पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लडका या लडकी किसी के घर में न रहने पावें किन्तु आचार्य कुल में रहें। जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावें।"*

महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन राजा महाराजाओं को इस आशय के पत्र भी लिखे थे कि राज्य की कुल आय का १० प्रतिशत धन धर्मप्रचार, शास्त्रीय और पठनीय ग्रन्थों की छपाई, युद्ध-शिक्षा (सैनिक शिक्षा), वेद-विद्या, शैक्षणिक शिक्षा आदि के प्रचार प्रसार पर व्यय किया जाए तथा १० प्रतिशत धन शिल्प-शिक्षा, कुल २० प्रतिशत धन शिक्षा व्यवस्था पर राज्य द्वारा खर्च किया जाए। (ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन पृ. ६३२,७६७,७६८)

विद्वान् अनुसंधानकर्त्ता, लेखक, कवि, आचार्य, एवं विद्यावान, होनहार छात्रों का सहयोग और सत्कार करने में अपने राज्य का धन लगायें। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)। इन उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि महर्षि शिक्षा के बारे में उस समय तो बहुत ही आगे थे परन्तु आज भी वे किसी मायने में पिछड़े हुए न होकर आगे ही हैं।

न्यास के तत्वावधान में

एक शाम- दयानन्द के नाम

२२ सितम्बर २०१३ -सायं ५ बजे से-

मुख्य सान्निध्य-माननीय डॉ. सुखदेव चन्द सोनी, शिकांगो- संरक्षक न्यास
एवं मा. एवान सोनी

विद्वत् मण्डल- डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई
आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, नई दिल्ली

संगीतकार - श्री इन्द्रदेव पीयूष, श्री सुधाकर पीयूष एवं अन्य स्थानीय प्रस्तुतिकार

इस सुरीली संध्या में पधारकर आर्यावर्त्त और उसके लाडले सपूत स्वामी दयानन्द के ऋणों का गुणगान करें।
कार्यक्रम समापन पर सहभोज में सम्मिलित हो उपकृत करें।

निवेदक - भवानी दास आर्य

भारत के विज्ञानवेत्ता दार्शनिक महर्षि कणाद

प्राचीन भारत के वैज्ञानिक दार्शनिकः

डॉ. भवानी लाल भारतीय

विधिवेत्ता आचार्य मनु की इस उक्ति में पर्याप्त सच्चाई है कि भारत (पुराना नाम आर्यावर्त) के विद्वद्वर्ग के समीप संसार के लिए जिज्ञासुओं के समूह के समूह आया करते थे। इसका कारण भी था। यहाँ के ये गुरुजन शास्त्रीय और लौकिक,आध्यात्मिक तथा भौतिक,दूसरे शब्दों में परा और अपरा विद्याओं में निष्णात होते थे। ऐसे ही एक विज्ञानवेत्ता दार्शनिक ऋषि थे कणाद। सांसारिक वैभव के प्रति नितान्त उदासीन तथा अर्थ संचय के प्रति उपेक्षावृत्ति रखने वाले कणाद के नाम को लेकर यह उक्ति प्रसिद्ध है कि अनाज की फसलों के कट जाने तथा खेतों के खाली हो जाने पर जो बचे खुचे अनाज के दाने वहाँ पड़े रहते उन्हें बीनकर ये ऋषि अपना भोजन बनाते और त्यागमय जीवन व्यतीत करते थे। इसीलिए उनका नाम कणाद (कणों को भक्षण करने वाले) पड़ गया था।

वायु पुराण में आये इतिवृत्त से पता चलता है कि सौराष्ट्र में द्वारिका के समीप का प्रभाष पाटन उनका जन्म स्थान था। सोम शर्मा को उनका गुरु बताया गया है। ईसा से पर्याप्त समय पूर्व जन्मे कणाद का गोत्र कश्यप था। अणु (परमाणु एटम) सिद्धान्त के आद्य प्रवर्त्तक कणाद ने जिस वैज्ञानिक तथ्यों से युक्त दर्शन का उपदेश दिया उसे वैशेषिक दर्शन कहा जाता है। ऋषि दयानन्द को वैशेषिक दर्शन में

विशेषव्युत्पन्नता प्राप्त थी तथा प्रसिद्ध विदुषी रमा बाई ने मेरठ में रहकर पर्याप्त समय तक स्वामी जी से उस दर्शन का अभ्यास किया था। सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में जहाँ स्वामी जी ने तत्त्व विचार विषय को निरूपित किया है वहाँ उन्होंने सर्वाधिक लगभग छियालीस वैशेषिक सूत्रों को अर्थ सहित उद्धृत किया है। परमाणु के बारे में सामान्य उक्ति है कि किसी झरोखे की जाली से आने वाली धूप में सूर्यकिरणों से उड़ते हुए दिखने वाले सूक्ष्म कणों का एक का साठवाँ भाग परमाणु कहलाता है। यह प्रकृति का सूक्ष्मतम अंश है। दयानन्द ने कणाद दर्शन के परमाणु तथा कपिल दर्शन के प्रकृति का समन्वय करते हुए 'प्रकृति के परमाणु' इस पद का प्रयोग किया है। वैशेषिक दर्शन में छः मूल तत्त्वों को स्वीकार किया गया है- ये हैं-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। कालान्तर में इनमें 'अभाव' को जोड़कर सप्त पदार्थों की कल्पना की गई। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ,काल और दिशा के अतिरिक्त मन और आत्मा की भी गणना की गई है। वैशेषिक दर्शन (सूत्रात्मक) कणाद प्रोक्त, इस दर्शन का मूल ग्रन्थ है। इस पर प्रशस्तपाद भाष्य का अध्ययन करने की संस्तुति ऋषि दयानन्द ने की है तथा तर्क संग्रह (अन्नं भट्ट कृत) आदि परवर्ती अनार्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन का निषेध किया है।

कालान्तर में न्याय-वैशेषिक को समान विचारधारा वाले दर्शन कहा गया तथा कणाद गौतमीयम् आदि ग्रन्थों में इनका साथ साथ विवेचन किया गया। इस दर्शन की मान्यता है कि उक्त छः या सात तत्त्वों के साधर्म्य तथा वैधर्म्य के समुचित ज्ञान से तत्त्वज्ञान उत्पन्न होता है जो अन्ततः मनुष्य को

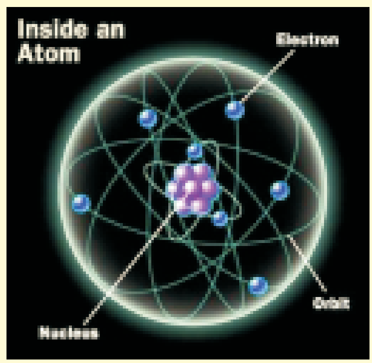

निःश्रेयस(मोक्ष) के मार्ग पर ले जाता है। इसी प्रकरण में भगवान कणाद ने धर्म की व्यापक तथा तथ्यपरक परिभाषा देते हुए उसे अभ्युदय (सांसारिक उन्नति) जो भौतिक उन्नति का पर्याय है तथा निःश्रेयस पारलौकिक उन्नति, ईश्वर प्राप्ति तथा मोक्ष को सिद्ध करने वाला बताया है। कालान्तर में कणाद प्रतिपादित मूल सिद्धान्तों की व्याख्या में पर्याप्त साहित्य लिखा गया।

३/५-शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

हिन्दू का जनेऊ (यज्ञोपवीत) प्राकृतिक चिकित्सक है।

आचार्य आर्य नरेश

जनेऊ अर्थात् यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र अथवा ब्रह्म-सूत्र का मानव जीवन से सम्बन्ध अनादि काल से है। मनुष्य से देवत्व प्राप्त करने में जनेऊ सशक्त साधन है, यह हिन्दू संस्कृति का मौलिक सूत्र है। आधुनिक विज्ञान भी इसका खण्डन नहीं कर सकता, बल्कि वैज्ञानिक कसौटियों पर परखने के पश्चात् आज वैज्ञानिक भी इस सूत्र को रोग निवारक कहने को विवश हैं।

इस सूत्र का सम्बन्ध हमारे आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक जीवन से है। जनेऊ पहनना हिन्दू संस्कृति की अनूठी देन है। आज के वैज्ञानिक युग में जहाँ बिना किसी लागत, बिना कोई दुष्प्रभाव (Side Effects) के कोई रोगों का सम्पूर्ण इलाज हो जाता है, आज की बहुचर्चित मगर प्रचलन से निष्कासित होती एलौपेथी में सम्भव नहीं हो पाता है। बायें कन्धे पर जनेऊ देवत्व भाव तथा दायें

कन्धे पर जनेऊ मित्र भाव की द्योतक है। वारी विश्व-विद्यालय इटली के न्यूरो सर्जन प्रो० एवारीका पीरान्जेली ने प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया है कि कान के मूल में चारों तरफ दबाव डालने से हृदय को लाभ मिलता है। पीरान्जेली ने हिन्दुओं द्वारा शौच, लघुशंका समय कान पर लपेटे गए जनेऊ को हृदय रोगों से बचाने वाली ढाल कहा है।

लन्दन के क्वीन एलिजाबैथ चिल्ड्रन अस्पताल के डॉ. सक्सेना के अनुसार हिन्दुओं द्वारा मल-मूत्र त्याग समय कान पर जनेऊ लपेटने का वैज्ञानिक आधार है। ऐसा करने से आँतों की अपकर्षण गति बढ़ती है, जिससे कब्ज दूर होती है तथा मूत्राशय की मांसपेशियों का संकोच वेग के साथ होता है।

कान के पास की नसें दबाने से बढ़े हुए रक्तचाप को नियन्त्रण करने तथा कष्ट देने वाली श्वांस प्रक्रिया को सामान्य किया जा सकता है। योग शास्त्रों में स्मरण शक्ति तथा नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए कर्ण पीड़ासन का बहुत महत्व बताया है। इस आसन में घुटनों द्वारा कान पर दबाव डाला जाता है, इसलिए कान पर कसकर जनेऊ लपेटने से कर्ण पीड़ासन के सभी लाभों की प्राप्ति सहज ही हो जाती है।

उपरोक्त तथ्यों से सिद्ध हुआ कि जनेऊ पहनना केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं बल्कि रोग मुक्त रहने के लिए सम्पूर्ण मानव जाति के लिए लाभकारी है।

१३२ ए, पाकेट-१, मयूर बिहार दिल्ली-११००९१
९४१८०२१०९१

ओ३म्

मुझे सत्यार्थ सौरभ का सदस्य बनना है

सदस्यता फार्म

वैदिक शिक्षाओं व भारतीय संस्कृति को जन-जन में प्रसारित करने हेतु आप द्वारा सत्यार्थ प्रकाश को समर्पित सत्यार्थ-सौरभ पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय स्तुत्य है। मैं इस पत्रिका का संरक्षक/ आजीवन/ विशिष्ट/वार्षिक सदस्यता ग्रहण करता /करती हूँ।

पत्रिका सहयोगः-

संरक्षक पत्रिका- ११०००/- ☐
आजीवन (१५) वर्ष- १०००/- ☐
विशिष्ट सदस्य (५) वर्ष- ४००/- ☐
वार्षिक सदस्य- १००/- ☐

राशि जरिये/ ड्राफ्ट/ चैक/ मनीआर्डर/ नकद प्रेषित कर रहा/रही हूँ।

मेरा विवरण :-

१. नाम ....
....
२. पूरा पता ....
....
....
पिन ☐☐☐☐☐☐
३.टेलिफोन नं. ....
मोबाइल नं. ....
४. ई-मेल ....

नोटः

१.आप अपना सहयोग बैंक में भी जमा करवा सकते हैं बैंक खाता सं.३१०१०२०१००४१५१८ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा उदयपुर। ऐसा करने वाले महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष या पत्र द्वारा तत्काल सूचित करने का श्रम करें, जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके।

२.आप अपनी सहयोग राशि इलेक्ट्रॉनिक मनीऑर्डर से ना भेजें। यदि भेजते हैं तो दूरभाष या पत्र द्वारा सूचना अवश्य प्रेषित करें।

३.पता परिवर्तन होने पर परिवर्तित पते की सूचना अति शीघ्र भेजें।

४.जिन महानुभावों ने राशि भेज सदस्यता ग्रहण कर ली है, पर यह विवरण पत्र नही भरा है वे कृपया रिकार्ड हेतु इस प्रपत्र को भरकर अवश्य भेज दें।

५. कृपया अपने गाँव/शहर/जिला/राज्य का पिन कोड अवश्य लिखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सौरभ' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सौरभ के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

बाल वाटिका

परोपकार से जीवन की सार्थकता

सामान्यतः हम अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए परमात्मा की उपासना या प्रार्थना करते हैं। हमारा दृष्टिकोण सीमित होता है। हमारी उपासना का प्रयोजन केवल अपना हित साधना होता है किन्तु केवल स्वार्थ में लगे रहने से जीवन सार्थक नहीं होता। जीवन तभी सार्थक होता है जब हमारी उपासना, कार्य, दूसरों की भलाई के लिए हो। एक प्रेरक प्रसंग यहाँ प्रस्तुत है।

एक सेठ प्रतिदिन सांयकाल अंधेरा होते ही मंदिर में जाता और घी का दीपक जला कर अपनी सुमध्दि की कामना करता। एक निर्धन व्यक्ति भी उसी समय मंदिर जाता। वह तेल का दीपक ले जाता। मंदिर में पूजा अर्चना करता और फिर उस दीपक को मंदिर से उठा कर अपने घर के सामने वाली अंधेरी गली के किनारे रख आता जिससे वहाँ उजाला रहे और मुहल्ले के आने जाने वाले लोगों को बिना ठोकर खाये गली का रास्ता पार करने में कोई कठिनाई न हो। दैवयोग से उस सेठ और निर्धन व्यक्ति का निधन एक ही दिन एक ही समय हुआ। मान्यता के अनुसार दोनों को धर्मराज के समक्ष उपस्थित किया गया। धर्मराज ने सेठ से अधिक निर्धन के पुण्य गिनाते हुए उसे स्वर्ग में अच्छा स्थान देने का आदेश दिया। धनवान धर्मराज के आदेश को सुनकर भौचक्का रह गया। वह बोला यह भेदभाव क्यों? मैं तो प्रतिदिन घी का दीपक जलाता था जबकि यह कंगाल तेल का। फिर उसे मुझसेअधिक श्रेष्ठ क्यों ठहराया गया? धर्मराज ने मुस्कराकर इसका कारण इस प्रकार बताया। 'सेठजी तुम केवल अपनी समृद्धि हेतु, अपनी सुख सुविधाओं तथा धन प्राप्त करने के लिए घी का दीपक जलाते थे जबकि यह गरीब व्यक्ति सबकी भलाई तथा लोगों की सुविधा के लिए, उन्हें राह दिखाने के लिए अंधेरी गली में दीपक रखता था। कर्मों का आकलन इस बात से किया जाता है कि यह कार्य किस प्रयोजन से किया जा रहा है। दूसरों की भलाई के लिए किये गये किसी भी कार्य में पुण्य स्वभावतः अधिक होता है।'

संकलन- संजय शाण्डिल्य, उदयपुर

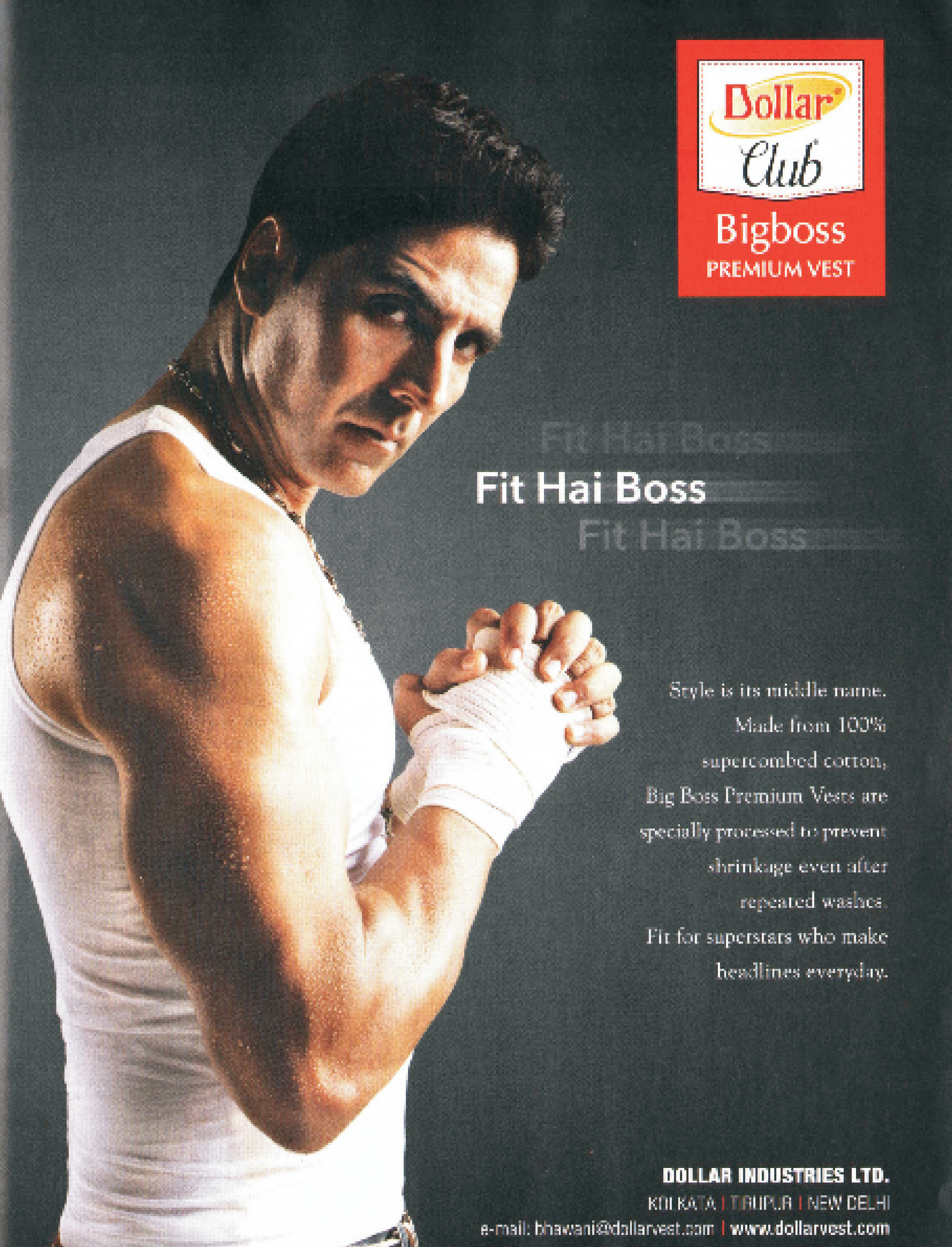
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Style is its middle name. Made from 100% supercombed cotton, Big Boss Premium Vests are specially processed to prevent shrinkage even after repeated washes. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2013 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्त्ती सार्वभौम रामा आर्य्यकुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राज भ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं।

महाभारत

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य